ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

# परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५५ अंक - ५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मार्च ( प्रथम ) २०१४

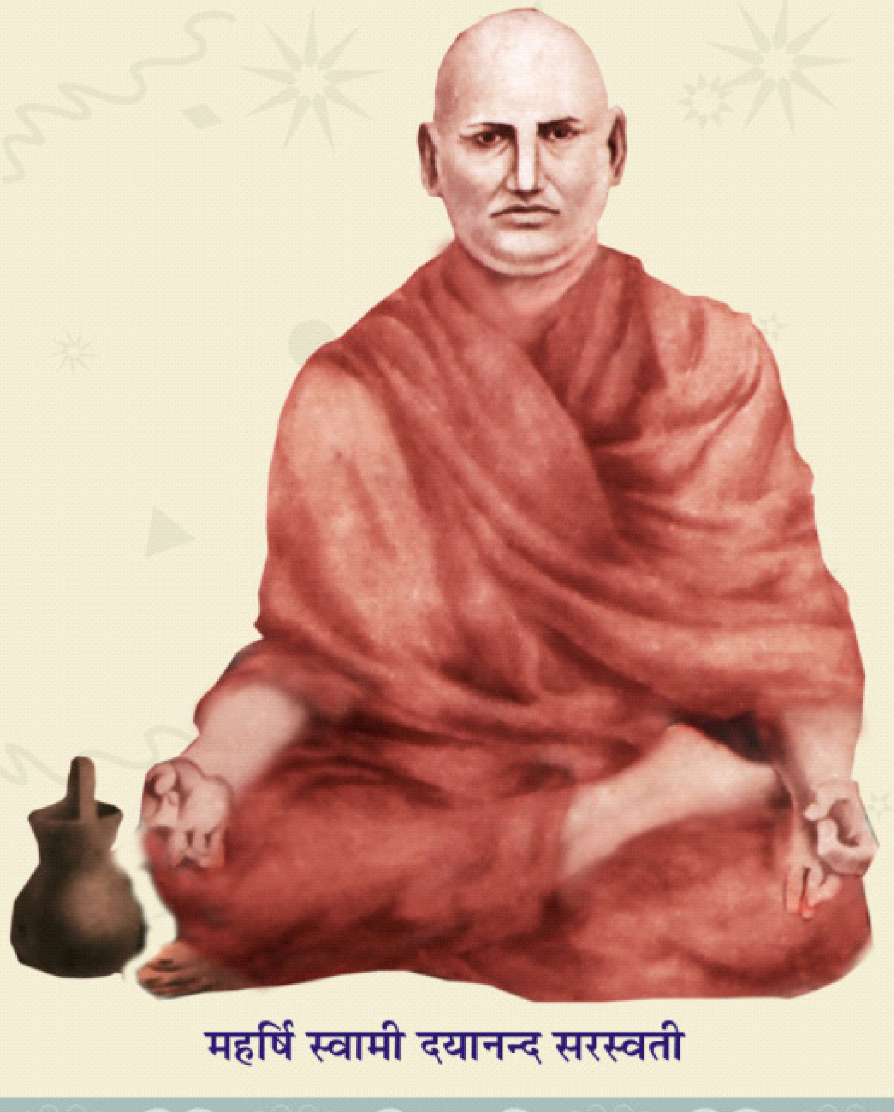

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

महाशिवरात्रि
ऋषि बोध दिवस

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र**

**वर्ष :** ५५ **अंक :** ५
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: फाल्गुन शुक्ल, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

**सम्पादक**
प्रो. धर्मवीर

**प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

**मुद्रक**-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

**-परोपकारी का शुल्क-**

**भारत में**

**वार्षिक**-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

**विदेश में**

**वार्षिक**-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

**वैदिक पुस्तकालय :** ०१४५-२४६०१२०
**ऋषि उद्यान :** ०१४५-२६२१२७०

*लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।*
*संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।*

RNI. No. ३९५९/५९

# परोपकारी

## मार्च प्रथम २०१४

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| १. 'आप' हैं कौन? | सम्पादकीय | ०४ |
| २. सा विद्या या विमुक्तये | स्वामी विष्वङ् | ०६ |
| ३. कुछ तड़प-कुछ झड़प | राजेन्द्र जिज्ञासु | १० |
| ४. अहिंसा परमो धर्म: | ब्र. राजेन्द्रार्य | १५ |
| ५. काकोरी षड्यन्त्र केस | शचीन्द्रनाथ बक्शी | २२ |
| ६. सम्बन्धों की सार्थकता | सुकामा आर्या | २६ |
| ७. वेदों की बातें | रामप्रसाद शर्मा | ३२ |
| ८. ज्ञान, ज्योति और चारित्र्य के..... | आचार्य विधुशेखर | ३४ |
| ९. स्वप्रेरित प्रेरणास्पद विचार | अनुपमा शर्मा | ३५ |
| १०. जिज्ञासा समाधान-५८ | आचार्य सोमदेव | ३६ |
| ११. संस्था-समाचार | | ३९ |
| १२. आर्यजगत् के समाचार | | ४१ |


www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

**- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -**
**www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan**

सम्पादकीय

# ‘आप’ हैं कौन?

‘आप’ का बनना, चुनाव लड़ना, सरकार बनाना, सब कुछ अप्रत्याशित लगता है। जिस आशा के साथ इस पार्टी का निर्माण हुआ, उतनी ही निराशा इसके काम से है। इसके बनने के कारण में सामान्यजन की पीड़ा मुख्य है। इस पीड़ा का मूल शासन-प्रशासन में व्याप्त रिश्वतखोरी है। जिसके कारण नियम, व्यवस्था सब कुछ निरर्थक हो गई है। इस घूसखोरी के कारण सामान्य मनुष्य का जीवन कठिनाई में पड़ गया है। जिसका काम नियम से होना चाहिए, उसका काम नहीं होता। जिसका काम होने योग्य नहीं है, उसका काम पैसे देकर हो जाता है। इस कुचक्र में सामान्यजन फंस कर रह गया है, इस विवशता को उसने नियति मान लिया था। ऐसे समय में उसकी पीड़ा को छूने का काम इन वर्षों में हुआ है। आप पार्टी ने भ्रष्टाचार मिटाने के नाम पर जनता से समर्थन माँगा, परन्तु आज सरकार में बैठकर आदर्श की बात को व्यवहार के धरातल पर लाने में असफल हो गई। इसके कारण पर विचार करने पर एक बात स्पष्ट होती है कि भ्रष्टाचार मिटाने के नाम पर सरकार बनाने वाले स्वयं भ्रष्टाचरण के दोषी हैं।

भ्रष्टाचार को हमने बहुत संकुचित अर्थ में लिया है। भ्रष्टाचार शब्द पूरे आचरण की भ्रष्टता की बात करता है। केवल पैसे के या घूस लेने की बात भ्रष्टाचार नहीं है। घूस लेना तो बहुत मोटा अर्थ है। वास्तव में भ्रष्टाचार विचारों से प्रारम्भ होता है। जिनके विचार पवित्र नहीं हैं, उनका आचरण कैसे पवित्र हो सकता है? भ्रष्टाचार मिटाने वालों के चरित्र और विचारों को देखने से उनके भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने की इच्छा-शक्ति का पता लगता है। आप पार्टी के लोगों की जड़ों तक जाने पर आपको पता लगता है कि ये उन विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इस देश के आचार-विचार और परम्परा से सहमति नहीं रखते। इनके सामने संकट भ्रष्टाचार नहीं है, भ्रष्टाचार को तो इन्होंने लड़ाई के साधन के रूप में काम में लिया है। आप पार्टी के नेता केजरीवाल जहाँ खड़े होकर लड़ रहे हैं वह स्थान ही भ्रष्टाचार का उद्‌गम स्थल है। आधुनिक पठित वर्ग में सामाजिक लड़ाई लड़ने वाले वर्ग का नाम गैर सरकारी संगठन है। इसे एनजीओ के नाम से जाना जाता है। भारत में चलने वाले ऐसे संगठनों की जाँच पड़ताल में पाया गया है कि अधिकांश ऐसे स्वयंसेवी संगठन केवल कागजों पर काम करते हैं। जो संगठन या समाज संघर्ष करते हैं, उनका संघर्ष उद्देश्य के लिए नहीं होता। ये संगठन उन लोगों के संकेत पर नाचते हैं, जो इनको पैसा देते हैं। जो लोग इस प्रकार के संगठनों को पैसा देते हैं, उनका वास्तविक उद्देश्य संघर्ष करने वाले लोगों को अपने विरोधी को नष्ट करने में लगाना तथा ऐसे लोगों को सुविधाजीवी बनाकर उनको सामर्थ्यहीन करना होता है।

आप पार्टी के कार्यकर्त्ताओं का चरित्र देखेंगे तो यह स्पष्ट हो जायेगा। भाजपा के नेता हर्षवर्धन ने सदन में केजरीवाल और सिसोदिया पर आरोप लगाया था कि इनके संगठन ने फोर्ड फाउण्डेशन से लाखों रुपये की सहायता ली है। आश्चर्य की बात है कि केजरीवाल ने अपने उत्तर में इसकी चर्चा तक नहीं की। जो लोग विदेशी सहायता के तथ्य को समझते हैं, वे जानते हैं कि ये संगठन आकर्षक सुन्दर नामों से काम करने वाले संगठनों से इस देश को तोड़ने और यहाँ की संस्कृति को निन्दनीय बताकर उसे नष्ट करने के लिये बड़ी मात्रा में धन देते हैं। इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। पिछले वर्षों में फोर्ड फाउण्डेशन ने विश्वविद्यालयों को अपनी कार्ययोजना को क्रियान्वित करने के लिए बहुत धन दिया, उसमें एक योजना थी- भारत की अनेकता में एकता। इस कार्यक्रम में लगता तो ऐसा है कि जैसे बंटे हुए देश को एक करने का कार्य किया जा रहा है, परन्तु इसमें अलगाववाद को बढ़ावा देना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। ये संगठन चर्च के माध्यम से समाज सुधार का काम करते हैं, परन्तु इनका उद्देश्य हिन्दू समाज में विघटन उत्पन्न करके उसको बिगाड़ना है। इस फाउण्डेशन की सहायता लेने वाले केजरीवाल किस रास्ते से देश की उन्नति करना चाहते हैं यह पता लग जाता है। केजरीवाल को सामाजिक आन्दोलन में लाने वाली सूचना के अधिकार के आन्दोलन के लिए काम करने वाली श्रीमती अरुणा राय थीं। इन सब की पृष्ठभूमि देखने पर ज्ञात होता है कि ये कांग्रेस, कम्युनिष्ट तथा विदेशी धन पर काम करने वाले संगठनों से जुड़े हैं। जो लोग सत्ता में रहे हैं, सत्ता के सहयोगी रहे हैं, वे एकाएक कैसे भ्रष्टाचार को मिटाने के अगुवा बन बैठे, यह समझने की बात है। अरविन्द केजरीवाल अरुणा राय के दल के सदस्य हैं और अरुणा राय सोनिया गांधी की सलाहकारों में है। जो व्यक्ति सोनिया गांधी के सहयोगियों में हों, वह कौन से भ्रष्टाचार को हटाने की बात कर रहे हैं यह विचारणीय है। जो सरकार देश में अब तक सबसे अधिक भ्रष्टाचार में लिप्त रही है, उनके सहयोगी आज भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे हैं।

भ्रष्टाचार केवल पैसे से नहीं होता, आचरण एक व्यापक शब्द है। इसका सम्बन्ध जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से है। जो व्यक्ति स्वयं के व्यक्तिगत जीवन में भ्रष्टाचार का

दोषी रहा हो, वह आज भी, उस आचरण से दूर कैसे रह सकता है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध 'आप' का आन्दोलन एक नारे से आगे नहीं बढ़ सका है। झूँठ बोलना, दूसरों पर दोषारोपण करना भी तो भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही आता है। आज आप पार्टी भ्रष्टाचार के आन्दोलन को कांग्रेस की नीतियों के बचाव के लिए लड़ रही है। सामान्यजन की बात  करने वाला केवल पैसे के बेईमानी की बात करता है, राष्ट्रद्रोह के विरोध में बोलना उचित नहीं समझता, सोनिया गाँधी की सलाहकार परिषद् अल्पसंख्यकों के नाम पर हिन्दू समाज को कुचलने के लिए कानून बनाने के लिये तैयार खड़ी है, क्या यह आचरण देश और समाज के साथ भ्रष्टाचार नहीं है? ऐसे लोगों को बचाने के लिए ही आप पार्टी का आन्दोलन है। कांग्रेस को आज भारतीय जनता पार्टी और मोदी से भय है और आप पार्टी भ्रष्टाचार के नाम पर मोदी विरोध करके देश के कांग्रेस विरोधी आन्दोलन को असफल करने के प्रयास में है। यह ईमानदारी के नाम पर खेला जाने वाला बेईमानी का खेल है। इसी प्रकार आप पार्टी के अन्य नेताओं का भी इतिहास है। आज इन्टरनेट ने जनता को सबकुछ सुलभ करा दिया है।

केजरीवाल के दूसरे साथी मनीष सिसोदिया भी अरुणा राय के दल के सदस्य हैं। यह कैसे माना जा सकता है, जो व्यक्ति कल तक कांग्रेस और कम्युनिस्टों के साथ काम कर रहा था आज भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहा है। यदि लड़ाई केवल भ्रष्टाचार के विरुद्ध हो तो सबसे पहले भ्रष्ट सरकार को केन्द्र से हटाने की आवश्यकता है। आप में मुख्यमन्त्री से नेता तक अराजकता फैलाने को भ्रष्टाचार मिटाना कहते हैं। सदन में अराजकता तो सड़क पर अराजकता, इससे लाभ यह होता है कि जनता का ध्यान मुख्य काम से हट जाता है। लोग इनके आचरण के पक्ष-विपक्ष बनकर विवाद में उलझे रहते हैं। दिल्ली सरकार के मन्त्री मनीष सिसोदिया भी स्वयं-सेवी संगठन चलाते रहे हैं और केजरीवाल के साथ  अन्ना आन्दोलन में भाग लेकर आज भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलन के अगुआ बने हुए हैं।

आप पार्टी में विवादास्पद लोगों की भरमार है, इनमें एक नाम है- वकील प्रशान्त भूषण। इनकी विशेषता है कि नक्सलवादी लोग वार्ता के लिए इनको अपना मध्यस्थ मानते हैं। इसी से इनकी विचारधारा का पता लगता है। जो व्यक्ति देश के साथ द्रोह करता हो वह भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन का ध्वज-वाहक बना है। इसी से भ्रष्टाचार विरोधी नारों का खोखलापन प्रमाणित हो जाता है। इतना ही नहीं, प्रशान्त भूषण को यह गौरव भी प्राप्त है कि वे आज भी कश्मीर में जनमत की बात करते हैं। उनके विचार से कश्मीर के आतंकवादियों के विरुद्ध सेना की नियुक्ति वहाँ की जनता से पूछकर की जानी चाहिए। प्रशान्त भूषण अपने राष्ट्र विरोधी वक्तव्यों के कारण हर समय विवाद में बने रहते हैं। समाचार देखने वाले जानते हैं कि अमेरिका का एक संगठन जो कश्मीर के विषय में पाकिस्तानी पक्ष पर अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियाँ करता था, जिनमें बड़े-बड़े पत्रकार, लेखक भाग लेते थे और पाकिस्तान के पैसे पर विदेश यात्रा का आनन्द उठाते थे। जब उस संगठन को चलाने वाले की करतूते समाचार पत्रों में आई तो प्रशान्त भूषण जैसे लोगों ने बड़े भोलेपन से कह दिया कि हमें तो पता नहीं था। इन कार्यों से ही इनके भ्रष्टाचार विरोधी होने का पता चल जाता है। ऐसे लोग भ्रष्टाचार विरोध के नाम पर भ्रष्ट सरकार और विदेशी शक्तियों का बचाव करने में लगे हैं।

आप के एक और प्रमुख सदस्य योगेन्द्र यादव भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन में जुड़े, ये भी सोनिया गाँधी की सलाहकार परिषद् के सदस्य थे। सोनिया गाँधी के कारण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य भी बन गये थे। बड़े मृदुभाषी हैं, यदि सोनिया गाँधी भ्रष्ट नहीं है तो उनके सलाहकार कैसे भ्रष्ट हो सकते हैं। सोचने की बात है जो कल तक भ्रष्टाचार करने वालों के दल में थे, आज वे भ्रष्टाचार के विरोध में आन्दोलन के सूत्रधार बन गये। इनके भ्रष्टाचार मुक्त होने की इससे बड़ी कसौटी और क्या हो सकती है। आप पार्टी के प्रवक्ता गोपाल राय तो प्रारम्भ से साम्यवादी पार्टी से जुड़े रहे हैं। ये लखनऊ विश्वविद्यालय में साम्यवादी दल की ओर से छात्र संघ के अध्यक्ष रहे हैं। साम्यवादी दल की पवित्रता तो सामान्य व्यक्ति जानता है। साम्यवाद का सूत्र संस्कृत-संस्कृति, हिन्दी-हिन्दू का विरोध करना इन्हें मान्य है और ये भी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने में देश को दिशा दे रहे हैं?

वास्तव में ये आम शब्द के अपहरण जैसा है, जिसका आम के साथ सम्बन्ध नहीं वह आम की टोपी लगा कर आज खास बन बैठा। बस खास बनने के लिए आम बनने का नाटक है। यदि वास्तव में आम है तो इस देश में अर्थ से भी बड़ा अनर्थ, अर्थ से बड़ा भ्रष्टाचार भाषा का है। सामान्य मनुष्य का कष्ट रिश्वत से उतना नहीं है, जितना उसको बलपूर्वक विदेशी भाषा में व्यवहार करने में है। यदि कोई आम आदमी की बात करेगा तो उसे आम आदमी की भाषा में बात करनी होगी। क्या केजरीवाल की सरकार में दम है कि वह आम आदमी को भाषा के भ्रष्टाचार से बचा सके? सम्भवत: ऐसा प्रश्न आने पर इसे करने का साहस दिखा सके, इसमें सन्देह है।

**शेष भाग पृष्ठ संख्या १३ पर....**

# सा विद्या या विमुक्तये

- स्वामी विष्वङ्

संसार में सभी मनुष्य एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि सभी मनुष्य शिक्षित हों, पठित हों, साक्षर हों। कोई भी मनुष्य अशिक्षित, अपठित न हो। सभी मनुष्य विद्या से युक्त हों, कोई भी अविद्या से, मूर्खता से युक्त न हो। यदि कोई व्यक्ति ६०-७० वर्ष की अवस्था वाले को साक्षर कर दे, तो बहुत बड़ा पुण्य मानते हैं। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं, उन्हें उत्तम भावना से देखते हैं, उन्हें अच्छा मानते हैं। संसार में जितने भी देश हैं, वे सभी देश अपने देशवासियों को पूर्ण साक्षर देखना चाहते हैं। इसलिए सभी देश इस प्रयास में लगे हुए हैं कि हमारे देश में एक भी अपठित, अशिक्षित न हो। सभी मनुष्य सभी मनुष्यों के लिए ऐसा क्यों सोचते हैं कि सभी पठित हों? यदि पठित न बनें, तो क्या हानि है और पठित बनते हैं, तो क्या लाभ है? इसका समाधान पठित वर्ग कुशलता से देता है कि यदि अपठित रहते हैं, तो दु:ख भोगना पड़ेगा और दु:ख भोगना संसार में मनुष्य के लिए सबसे बड़ी हानि है। यदि शिक्षित रहते हैं, तो सुख भोगेंगे और सुख भोगना संसार में मनुष्य के लिए सबसे बड़ा लाभ है। सारांश यह निकलता है कि शिक्षित मनुष्य सुखी रहता है और अशिक्षित मनुष्य दु:खी रहता है। इसलिए कहा जाता है कि विद्या से सुख मिलता है और अविद्या से दु:ख मिलता है। इस बात को बड़े-बड़े ज्ञानी, महापुरुष, ऋषि, मुनि कहते हुए आये हैं। आज भी कहते हैं और आगे भी कहते रहेंगे। सभी शास्त्र भी यही कहते हैं। इतना ही नहीं शास्त्रों का शास्त्र महाशास्त्र वेद भी यही कहता है कि '**विद्ययाऽमृतमश्नुते**' (यजुर्वेद ४०.१४) अर्थात् विद्या से ही मनुष्य सुख पाता है और अविद्या से दु:ख पाता है। संसार में सुख पाने का और कोई माध्यम नहीं है।

संसार में मनुष्यों के दो वर्ग हैं। एक पठित वर्ग कहलाता है, दूसरा अपठित वर्ग कहलाता है। दोनों वर्ग सुखी भी हैं और दु:खी भी हैं। दोनों वर्गों में अन्तर इतना है कि पठित वर्ग के दु:ख अलग प्रकार के हैं और अपठित वर्ग के दु:ख अलग प्रकार के हैं। अपठित वर्ग के पास प्राय: भौतिक संसाधन या तो नहीं होते हैं अथवा बहुत कम होते हैं- जैसे धन, मकान, गाड़ी, जमीन आदि की कमी। अन्न की कमी से कुपोषण आदि अनेकों समस्याओं से ग्रसित होकर दु:ख भोगते रहते हैं। परन्तु पठित वर्ग के पास प्राय: भौतिक संसाधन बहुत होते हैं। उनके पास धन, मकान, गाड़ी, जमीन आदि की कमी नहीं होती है। किन्तु लालसा इतनी अधिक होती है कि जितने भी भौतिक संसाधन बढ़ जायें, तो भी उन्हें कम दिखते हैं और अधिक पाने के लिए भाग-दौड़ करते हुए दु:खी होते रहते हैं। अपठित वर्ग के पास भौतिक संसाधन इसलिए नहीं है कि वे विद्या पढ़ नहीं पाये। विद्या न पढ़ पाने के कारण शिक्षित नहीं बन सके। शिक्षित न बन सकने के कारण शिक्षा से मिलने वाले भौतिक संसाधनों की कमी रहती है, जिससे दु:ख उठाते रहते हैं। यदि अशिक्षितों को सभी प्रकार के भौतिक संसाधन मिल भी जाये, तो भी सभी का प्रयोग नहीं कर पायेंगे। इस कारण भी अशिक्षित दु:ख पाते हैं। भले ही अशिक्षित विद्यालयों में जाकर विद्या न पा सके, किन्तु बिना विद्यालयों में जाये भी, परम्परा से बिना पुस्तकों की बहुत सी शिक्षाएँ माता-पिता, समाज आदि के द्वारा प्राप्त करते हैं। उन शिक्षाओं के कारण अपठित होते हुए भी बहुत सा सुख पाते हैं। जहाँ कहीं पर भी कोई भी मनुष्य अपठित होकर भी जिस किसी भी विषय में सुखी है। उस सुख का आधार विद्या ही है और वह विद्या चाहे किसी भी रूप में उसे प्राप्त हुई हो। क्योंकि विद्या में ही वह सामर्थ्य है, जो मनुष्य के दु:ख को दूर कर सके। विद्या चाहे विद्यालयों से प्राप्त हो या बिना विद्यालयों के प्राप्त हो। मनुष्य के पास विद्या हो, अविद्या न हो। क्योंकि विद्या सुख का कारण है और अविद्या दु:ख का कारण है। यह शाश्वत सिद्धान्त है, इस सिद्धान्त में विकल्प नहीं है।

संसार में पठित वर्ग दु:खी होता है तो उस दु:ख के पीछे पठित होना कारण नहीं है बल्कि विद्या का न होना कारण है। पठित होना अलग बात है और विद्या का होना अलग बात है। प्राय: मनुष्य इस बात को नहीं जान पाता है कि विद्या का होना क्या है और अविद्या का होना क्या है? क्योंकि मनुष्य अनेकत्र यह कहता है कि 'मैं जानता हूँ' जहाँ मनुष्य जानता है वहाँ सुखी भी दिखाई देता है और दु:खी भी दिखाई देता है अर्थात् किसी विषय में जानता हुआ सुखी होता है और दु:ख से बच जाता है। जैसे सड़क पर चलता हुआ सामने से आने वाले वाहनों से बचता हुआ सुखी होता है और दु:ख से बच जाता है। यहाँ जानकारी ही कारण है, जिससे मनुष्य दु:ख से बच रहा है। परन्तु मनुष्य यह जानता है कि चिन्ता से हानि होती है, दु:ख मिलता है, मनुष्य का सर्वनाश होता है। फिर भी चिन्ता करता है,

चिन्ता तो होनी चाहिए, चिन्ता को आवश्यक मानता है। यह एक उदाहरण मात्र है। अनेकों स्थानों पर मनुष्य जानता हुआ भी दु:ख भोगता रहता है। दु:ख को दूर नहीं कर पाता है। एक ओर से जानता हूँ कहता है और दूसरी ओर से दु:खी होता है। ऐसा सभी विषयों में नहीं करता है। किसी-किसी विषय में जानता हुआ सुखी होता है और किसी विषय में दु:खी होता है। सभी विषयों में सुखी नहीं होता और सभी विषयों में दु:खी नहीं होता। ऐसा क्यों करता है? इसका समाधान यही है कि जिन-जिन विषयों में जानता हुआ सुखी हो रहा है वहाँ-वहाँ विद्या के कारण से हो रहा है। और जहाँ-जहाँ जानता हुआ भी दु:खी हो रहा है वहाँ-वहाँ अविद्या के कारण से हो रहा है। इसलिए किसी कवि ने कहा है कि **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात् विद्या उसे कहते हैं जो दु:खों को दूर करने वाली हो। विद्या उसे कभी नहीं कहते जो दु:खों को दूर नहीं कर सकती हो। यदि कोई कहता है कि मैं जानता हूँ (अर्थात् मेरे पास विद्या है) फिर भी दु:खी हो रहा हूँ, इसका अभिप्राय यह है कि उसके पास विद्या नहीं है। हाँ, विद्या के नाम से शब्द हैं अर्थात् वह शब्दों को जानता है, शब्दों में निहित विद्या को नहीं जानता। यदि जानता होता तो दु:ख को अवश्य दूर करता, परन्तु न जानने के कारण ही दु:खी हो रहा है।

यहाँ पर विद्या के विषय में यह समझना चाहिए कि **'विद्या'** से शब्द विद्या और शब्दों का अर्थ दोनों ग्रहण होते हैं। उदाहरण के लिए काले सांप को मत छेड़ो, यहाँ काले/ सांप/ को/ मत/ छेड़ो/ ये शब्द हैं। इन शब्दों को जानना अलग है और इन शब्दों को जानने के साथ-साथ इनका अर्थ भी जानना, तभी पूरा जानना कहलायेगा। वयस्क वर्ग के सभी लोग यह अच्छी प्रकार जानते हैं कि काले सांप को मत छेड़ो का क्या अर्थ है, परन्तु छोटे बच्चे (जिन्हें समझ नहीं आया) शब्दों को जानते हुए भी सांप को छेड़ते हैं या उसे पकड़ने का प्रयास करते हैं। यहाँ छोटे बच्चे पूरा नहीं जानते हुए दु:ख उठाते हैं। बड़े व्यक्ति पूरा जानते हुए दु:खों से बच जाते हैं। इस उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है कि शब्दज्ञान दु:खों को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है अर्थात् शब्द ज्ञान के साथ अर्थ का ज्ञान भी होना चाहिए। अनेकत्र शब्दों के साथ-साथ अर्थ का ज्ञान भी होता है, परन्तु अर्थ का बोध होते हुए भी दु:ख उठाते रहते हैं। उदाहरण के लिए सिगरेट नहीं पीना चाहिए। यहाँ शब्दों को और शब्दों के अर्थों को भी जानते हैं, फिर भी सिगरेट पीकर दु:ख उठाते हैं। सिगरेट के समान अनेकों उदाहरण हो सकते हैं। जहाँ ऐसे-ऐसे उदाहरण जीवन में स्थान-स्थान पर आते रहते हैं। वहाँ मनुष्य दु:ख उठाता रहता है। यहाँ पर यह अच्छी प्रकार समझना चाहिए कि शब्दों के अर्थों को जानकर भी व्यक्ति दु:ख उठा रहा है, तो शब्दों के अर्थ में कमी है अर्थात् अर्थों को शत-प्रतिशत नहीं जानता। मनुष्य को अभी अर्थ का ज्ञान शत-प्रतिशत दृढ़ नहीं हुआ। क्योंकि जहाँ पर जानकारी शत-प्रतिशत दृढ़ होती है वहाँ दु:ख दूर होता है और जहाँ शत-प्रतिशत नहीं होता वहाँ मनुष्य को विकल्प दिखाई देता है। इसलिए मनुष्य अपनी बुद्धि को विकल्प में लगाता है और सिगरेट आदि का सेवन करता है। सिगरेट आदि का सेवन करते हुए दु:ख से बचने के उपायों में लगा रहता है। यदि जानकारी पूरी होती, शत-प्रतिशत जानकारी दृढ़ होती, जिसमें विकल्प ही नहीं दिखाई देता, तो मनुष्य सिगरेट आदि का सेवन कभी नहीं करता, क्योंकि विद्या दु:खों से दूर करने वाली होती है। सिगरेट आदि असेवनीय वस्तुओं का सेवन वे ही करते हैं, जिनके पास उन वस्तुओं से सम्बन्धित अविद्या होती है, विद्या के अभाव के कारण ही ऐसा करते हैं। इन विषयों में उन्हें पूर्ण (शत-प्रतिशत) विद्या दृढ़ नहीं हो पाई है।

मनुष्य को जहाँ-जहाँ पूर्ण ज्ञान (शत-प्रतिशत दृढ़ रूप में) रहता है, वहाँ-वहाँ दु:ख से बचता रहता है और जहाँ-जहाँ पूर्ण ज्ञान नहीं रहता है, वहाँ-वहाँ मनुष्य दु:ख भोगता रहता है। जहाँ मनुष्य को यह कहा जाता है कि विद्या के होते हुए भी दु:खी हो रहा है, वहाँ विद्या शत-प्रतिशत पूरी नहीं है, ऐसा समझना चाहिए, इसीलिए दु:खी हो रहा है, क्योंकि महर्षि वेद व्यास लिखते हैं कि **'ज्ञानस्यैव पराकाष्ठा वैराग्यम्'** (योगदर्शन व्यासभाष्य १.१६) अर्थात् जानकारी की अन्तिम सीमा को वैराग्य कहा गया है। यहाँ पर पराकाष्ठा का अभिप्राय अन्तिम सीमा है, इसके आगे और कोई जानकारी बची हुई नहीं है किसी भी विषय की पूरी जानकारी को यहाँ पूर्ण ज्ञान कहा गया है। इसी को पूर्ण विद्या कहते हैं, पूर्ण विद्या ही वैराग्य कहलाती है। जिस-जिस विषय में वैराग्य (पूर्ण विद्या) होता है, उस-उस विषय में मनुष्य दु:खों से बच जाता है और जिस-जिस विषय में वैराग्य नहीं होता है, उस-उस विषय में मनुष्य दु:खों को भोगता रहता है। इसलिए जो लोग जिन-जिन विषयों में दु:खी दिखाई देते हैं, उन-उन विषयों में उनके पास पूर्ण विद्या नहीं है अथवा विद्या के स्थान पर अविद्या है। इसलिए मनुष्य दु:खी रहता है। मनुष्य किसी भी क्षेत्र में, किसी भी योग्यता को रखने वाला क्यों न हो यदि वह दु:खी हो रहा है, तो उसके पीछे विद्या का अभाव और अविद्या का भाव समझना चाहिए। जन्म-जन्मान्तरों से चली आ रही अविद्या मनुष्य के मानो नस-नस में व्याप्त हो चुकी है। आसानी से दूर होने वाली अविद्या नहीं है, इसे बहुत ही परिश्रम से दूर करना होगा। तपस्या पूर्वक परिश्रम

करना होगा और वह तपस्या भी घोर तपस्या हो, जिससे अविद्या को कमजोर किया जा सके। घोर तपस्या के साथ-साथ स्वाध्याय भी करना होगा। बिना स्वाध्याय (अलग-अलग शास्त्रों का अध्ययन) के यह जानकारी नहीं होगी कि किस-किस विषय में अविद्या है और किस-किस विषय में विद्या तो है, परन्तु अपूर्ण है उसे पूर्ण करना है, निर्णयात्मक करना है, दृढ़ करना है।

स्वाध्याय से ही मनुष्य को उचित-अनुचित, सत्यासत्य, न्यायान्याय, धर्माधर्म का बोध यथार्थ रूप में होता है, जिससे उन विषयों पर मनन-चिन्तन करके उचित निर्णय ले सके। जिन-जिन विषयों पर निर्णय लिया जाता है, उन-उन को दृढ़ बनाना पड़ता है। अन्यथा निर्णीत विषय भी संशयात्मक और भ्रामक बन जाते हैं। मनुष्य का ज्ञान-विद्या सदा एकरस नहीं रह पाती है। इसलिए तप के माध्यम से और स्वाध्याय के माध्यम से बार-बार अभ्यास कर करके और साथ-साथ व्यवहार में ला-लाकर उस विद्या को दृढ़ करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में विद्या पूर्णता को पाकर वैराग्य के रूप में बदल जाती है। यही ज्ञान की पूर्णता है और इसे ज्ञान की पराकाष्ठा भी कहते हैं। इसी को महर्षि दयानन्द सरस्वती पूर्ण-विद्या कहते हैं। पूर्ण-विद्या ही मनुष्य को सुख दे सकती है और दु:खों को दूर कर सकती है। मनुष्य कुछ विषयों में पूर्ण-विद्या से युक्त रहता है। उन विषयों में उसका ज्ञान बदलता नहीं है अर्थात् वह ज्ञान संशयात्मक और भ्रामक रूप में परिवर्तित कभी नहीं होता। सदा निर्णयात्मक और दृढ़ात्मक रूप में ही रहता है। ऐसा ज्ञान पूर्ण-ज्ञान, पूर्ण विद्या या वैराग्य के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए अग्नि में हाथ डालने से अग्नि जलाती है। यह ज्ञान पूर्ण-ज्ञान है, इस सम्बन्ध में मनुष्य कभी भी बदलता नहीं है। उसका ज्ञान सदा एकरस ही रहता है। ऐसे-ऐसे स्थानों पर मनुष्य पूर्ण-ज्ञान के कारण दु:ख से बच जाता है और सुख से युक्त रहता है। परन्तु जीवन में प्रात:काल से लेकर रात्रि में सोने पर्यन्त अनगिनत विषय आते हैं, जो मनुष्य के लिए आवश्यक होते हैं। उनमें प्राय: पूर्ण-ज्ञान न होने के कारण मनुष्य दु:ख उठाता रहता है। अनेक बार सामान्य विषयों में भी मनुष्य पूर्ण-ज्ञान नहीं रख पाता है। ऐसी स्थिति में विशेष गम्भीर विषयों में पूर्ण-ज्ञान कैसे रख पायेगा? इसलिए तप, स्वाध्याय का आश्रय लेना चाहिए।

ज्ञान को परिपूर्ण करने के लिए 'ईश्वर-प्रणिधान' भी महत्त्वपूर्ण साधन है। जहाँ तप व स्वाध्याय की आवश्यकता है, वहाँ ईश्वर-प्रणिधान की भी अत्यन्त आवश्यकता है। क्योंकि मनुष्य पूर्ण-ज्ञान से दु:खों को दूर और सुखों को पाना चाहता है और ईश्वर-प्रणिधान मनुष्य को अत्यन्त सावधान करता है, जागरुक बनाता है, एकाग्र करता है, प्रसन्न रखता है, उद्यमी बनाता है, उत्साही बनाता है, निरभिमानी बनाता है, श्रद्धावान् बनाता है। इतना ही नहीं मनुष्य के एक मात्र अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को भी दिलाता है। ईश्वर-प्रणिधान एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से कोई भी मनुष्य अपने लक्ष्य को सरलता से पा सकता है। लक्ष्य को पूरा करने के अनेकों उपाय हैं, परन्तु उन उपायों में सर्वश्रेष्ठ उपाय ईश्वर-प्रणिधान है। इस प्रकार मनुष्य जन्म-जन्मान्तरों में संचित अविद्या को तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान के द्वारा कमजोर व नष्ट करता हुआ अपने ज्ञान-विद्या को पूर्ण करने में सक्षम होता है। जिस-जिस विषय में मनुष्य ने ज्ञान को पूर्ण किया, उस-उस विषय में मनुष्य ने सदा सुख पाया। इसलिए विद्या सदा सुख देने वाली है दु:ख देने वाली कभी नहीं बनती है। हाँ मनुष्य अनेक बार अविद्या ग्रस्त होकर अपूर्ण-ज्ञान रखता हुआ दु:खी अवश्य होता है। जैसे आजकल अनेक लोग बहुत सारी शब्द विद्या की जानकारी रखते हैं और मानते हैं कि हम सब जानते हैं। परन्तु दु:खी होते हैं। उन-उन विषयों में वे पूर्ण-ज्ञानी नहीं होते हैं, इसलिए वे दु:ख उठाते रहते हैं। मनुष्य को यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि केवल शब्दों की जानकारी मनुष्य को अभिमानी बनाती है, दु:खी करती है, इसलिए शब्दों की जानकारी के साथ-साथ शब्दों में निहित अर्थ की जानकारी भी आवश्यक है। परन्तु अर्थ की जानकारी होते हुए भी व्यवहार में नहीं उतारा जाये, तो मनुष्य को दु:खी ही बनायेगी। हाँ शब्दों की जानकारी रखने वाले शब्दों की जानकारी न रखने वालों की अपेक्षा कम दु:खी अवश्य होते हैं। परन्तु मनुष्य कम दु:ख भी नहीं भोगना चाहता है, दु:ख से सर्वथा छूटना चाहता है।

यदि मनुष्य दु:ख से सर्वथा छूटना चाहता है, तो उसे साक्षर-पठित-शिक्षित बनना होगा। क्योंकि विद्यावान् व्यक्ति ही दु:खों को दूर कर सकता है और वह विद्या भी पूर्ण-विद्या हो। आधी-अधूरी-अपूर्ण विद्या न हो, पूर्ण विद्यावान् ही सर्वथा दु:खों को दूर कर सकता है। इसलिए कवि का कथन है **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात् विद्या वही कहलाती है, जो मनुष्य के दु:खों को दूर करती है। अन्यथा वह पूर्ण-विद्या नहीं कहलायेगी। अनेक बार अनेक लोगों को यह भ्रान्ति होती है कि पूर्ण विद्यावान् या पूर्ण विद्वान् कहने से यह अर्थ ले लेते हैं कि संसार के समस्त विषयों के विद्यावान् या विद्वान् हैं। परन्तु सर्वत्र पूर्ण विद्वान् का अर्थ एक ही प्रकार का नहीं होता है अर्थात् जब ईश्वर को सम्बोधित किया जाता है, तब पूर्ण विद्वान् का अर्थ समस्त

विषयों का विद्वान् होता है, क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है। परन्तु जब मनुष्य को सम्बोधित किया जाता है, तब पूर्ण विद्वान् का अर्थ अलग हो जाता है अर्थात् जिस विषय में अथवा जिन-जिन विषयों में निष्णात होता है, उतने ही विषयों में पूर्ण विद्वान् कहलाता है। क्योंकि मनुष्य ईश्वर के समान सर्वज्ञ न होकर अल्पज्ञ होता है। अल्पज्ञ व्यक्ति समस्त विषयों का पूर्ण ज्ञाता कभी नहीं बन सकता। हाँ यदि कोई यह कहे कि एक विषय में भी पूर्ण ज्ञाता (ईश्वर के समान) नहीं हो सकता, फिर उसे पूर्ण विद्वान् कैसे कह सकते हैं? इसका समाधान यह है कि जिस विषय के ज्ञान न होने से मनुष्य को दु:ख मिलता है, उस विषय का जितना ज्ञान मनुष्य को आवश्यक है, उतना ज्ञान मनुष्य कर लेता है और उससे मनुष्य उस विषय में दु:ख को सर्वथा दूर कर लेता है। इस कारण उतने अर्थ में उसे पूर्ण विद्वान् कहा जाता है।

संसार में कुछ शब्द सापेक्ष होते हैं अर्थात् उनका अर्थ अपेक्षा से लिया जाता है। उदाहरण के लिए 'निष्काम' शब्द है, यहाँ निष्काम का अर्थ ईश्वर की अपेक्षा से अलग है और योगी (मनुष्य) की अपेक्षा से अलग है। ईश्वर में अप्राप्त को प्राप्त करने की कोई कामना नहीं है, इसलिए ईश्वर निष्कामी है। परन्तु मनुष्य (योगी) की अपेक्षा में अर्थ बदल जाता है। योगी लौकिक कामना कभी नहीं कर सकता, परन्तु दु:ख को दूर करने की कामना अवश्य करता है, समाधि की कामना, मोक्ष की कामना आदि अवश्य करता है। इससे योगी को सकामी नहीं कहते हैं। लौकिक कामना के न होने से उसे निष्कामी कहा गया है। दूसरा उदाहरण 'अनन्त' शब्द का है, ईश्वर काल की दृष्टि से स्थान आदि सबकी दृष्टि से अनन्त है। परन्तु मनुष्य केवल काल की दृष्टि से अनन्त है। इस प्रकार अनेक शब्द सापेक्ष होते हैं, उन्हीं सापेक्ष शब्दों में पूर्ण विद्वान् शब्द भी है। इसलिए किसी सापेक्ष शब्द के प्रयोग से मनुष्य का प्रयोजन सिद्ध होता है, तो वह उचित ही माना जाता है, अनुचित नहीं और यह शास्त्र सम्मत है।

**ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)**

# ऋषिभक्त राव युधिष्ठिर सिंह जी रेवाड़ी

ऋषि दयानन्द जी हरियाणा में केवल रेवाड़ी में प्रचारार्थ पधारे, आपको यहाँ राव युधिष्ठिर सिंह जी ने भक्तिभाव से आमन्त्रित किया था। लगभग दो सप्ताह तक आपने वेद ज्ञान की गंगा प्रवाहित करके दूर-दूर से आये हुए धर्मप्रेमियों को तृप्त किया। राव साहब ने अपने क्षेत्र की जनता को इस धर्मकुम्भ में बुलाने का विशेष उद्योग किया।

वैसे महर्षि हरियाणा के अम्बाला नगर में भी एक बार रुके थे। लाला जीयालाल जैनी ने सन् १८६६ में अपने गृहनगर फरुखनगर में भी स्वामी जी के फेरी डालने का उल्लेख किया है। तब महाराज मथुरा क्षेत्र में ही साधुओं, प्रेमियों के साथ विचरण कर रहे थे। सम्भव है समीपवर्ती क्षेत्र के फरुखनगर भी फेरी डाली हो परन्तु इसका प्रमाण किसी जीवन चरित्र में नहीं मिलता।

ऋषि की रेवाड़ी यात्रा का अपना ही महत्त्व है। राव युधिष्ठिर सिंह हरियाणा के प्रथम कुरीति निवारक, सुधारक सिद्ध हुए। आपने अपनी माता के निधन पर भद्र नहीं करवाया। यह एक क्रान्तिकारी कार्य था। माता को वेदोक्त रीति से दाहकर्म करवाया। यह हरियाणा में पहला दाहसंस्कार था जो वैदिक विधि से करवाया गया। इस साहसिक कार्य के कारण राव युधिष्ठिर सिंह की धूम मच गई। इतिहास ऐसे ही बना करता है।

आगे चलकर राव जी की पत्नी श्रीमती लाड़कँवर को आर्यों ने आर्यसमाज रामपुर रेवाड़ी का प्रधाना चुनकर क्रान्ति का शंख फूँका। लाड़कँवर विश्व की प्रथम महिला थी जो उन्नीसवीं शताब्दी में संसार के एक तेजस्वी संगठन की किसी शाखा की प्रधाना बनाई गई। रेवाड़ी से ही आए भजनोपदेशकों के जनजागरण आन्दोलन को लोक कवि पं. बस्तीराम ने आरम्भ किया था। राव युधिष्ठिर सिंह जी ने महर्षि को आमन्त्रित करके जिस धर्म-प्रचार, समाज सुधार आन्दोलन को जन्म दिया उसके कई दूरगामी परिणाम निकले। विश्व की प्रथम गोशाला की स्थापना रेवाड़ी में ही की गई।

इस क्षेत्र ने देश व समाज को कई साहसी महात्मा धर्मोपदेशक विद्वान् दिये। वीतराग श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी सोमानन्द जी महाराज, स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज, महाशय हीरालाल जी और पं. ताराचन्द जी वैदिक तोप इसी क्षेत्र में जन्मे। इन पूज्य पुरुषों ने धर्म-प्रचार तथा जनजागरण का जो कार्य किया वह सदा स्मरणीय रहेगा। इसका सारा श्रेय राव युधिष्ठिर जी को ही जाता है। युधिष्ठिर सिंह जी भरी जवानी में चल बसे इससे देश की, हरियाणा की और आर्यसमाज की अपार क्षति हुई।

ऋषिवर २५ दिसम्बर १८७८ से जनवरी सन् १८७९ तक रेवाड़ी पधारे थे।

# कुछ तड़प-कुछ झड़प

**- राजेन्द्र जिज्ञासु**

**अमैथुनी सृष्टि**- कुछ प्रेमी पाठक बहुत अच्छे-अच्छे प्रश्न उठाते हैं। हमारे कृपालु अत्यन्त सूझबूझ से कई शंकायें भेजते हैं। शंका समाधान की परम्परा आर्यसमाज में अखण्ड रहती तो अन्धविश्वास तथा नये-नये मत, पन्थ न बढ़ते। गत दिनों एक नहीं कई उच्चशिक्षित युवकों ने अमैथुनी सृष्टि के आर्य -सिद्धान्त पर प्रश्न उठाया। ऐसा प्रश्न पूछने वाले यह भी कहा करते हैं कि आर्यसमाज की यह मान्यता बड़ी विचित्र है कि परमात्मा ने आदि सृष्टि में जिन मनुष्यों को उत्पन्न किया वे सब जवान थे और वे बिना माता-पिता के भूमि माता के गर्भ से उत्पन्न हुए।

एक बार जालन्धर डी.ए.वी. कॉलेज के छात्रावास में मेरे व्याख्यान के पश्चात् यही प्रश्न पूछते हुए प्रश्नकर्त्ता ने यह भी कहा था कि संसार में और कोई तो ऐसा नहीं मानता। आर्यसमाज की विचारधारा है तो तर्कसंगत परन्तु यह बात किसी भी पढ़े-लिखे के गले नहीं उतरती। तब उत्तर देते हुए मैंने कहा कि यदि आप अंग्रेजी पढ़े-लिखे होते तो ऐसा कदापि न कहते कि यह सिद्धान्त किसी पढ़े-लिखे के गले के नीचे नहीं उतरता। तब एक साथ कई युवा श्रोता बोल पड़े कि अंग्रेजी तो एक अनिवार्य विषय है। हम सब अंग्रेजी जानते हैं। मैंने कहा फिर आप कैसे कहते हैं कि पढ़े-लिखों के गले से यह सिद्धान्त नहीं उतरता? क्या अंग्रेजी की कविताओं में आदम तथा हौवा की चर्चा आने पर और स्वर्ग की 'ट्री ऑफ नॉलेज=ज्ञानवृक्ष' चखने की कहानी पढ़-सुनकर आपने अपनी कक्षा में पढ़ाने वालों से कभी यह प्रश्न पूछा कि **आदम तथा हौवा के डैडी व मम्मी का क्या नाम था?** जब मैंने यह वाक्य कहा तो सब युवक खिलखिलाकर हंस पड़े। करतल ध्वनि करते हुए मेरी युक्ति की पुष्टि भी कर दी। तब मैंने कहा धरती के तल पर करोड़ों ईसाई व मुसलमान आदम-हौवा की उत्पत्ति माँ-बाप से नहीं मानते। उनसे तो आप यह प्रश्न नहीं पूछते। कॉलेजों में जब विकासवाद की डुगडुगी बजाई जाती है, तब आप यह नहीं पूछते कि अमीबा के माता-पिता कौन थे?

रही सृष्टि के आरम्भ में जवान कैसे उत्पन्न किये गये? प्रभु ने जवान स्त्री-पुरुषों को क्यों बनाया? ऋषि ने इस प्रश्न का बड़ा स्वाभाविक व तर्कसंगत समाधान किया है फिर भी मैं आप लोगों से पूछता हूँ कि बाईबल के प्रथम पृष्ठ पर ही यह कहानी आती है कि परमात्मा स्वर्ग के उद्यान में भ्रमणार्थ जब निकला तो आदम और हौवा को वहाँ न पाकर उन्हें आवाजें देने लगा कि तुम कहाँ हो? वे दोनों भी सैर करने तो निकले थे परन्तु अपनी नग्नता के कारण लज्जा अनुभव कर रहे थे सो सामने आते हुए सुकचा गये। वृक्षों के पीछे लुक छुप गये। यदि वे जवान नहीं थे तो सैर करने कैसे चल पड़े? यदि वे बच्चे थे तो नंगा होने पर लज्जा कैसी? बच्चे तो नंगे ही घूमते फिरते हैं।

रहा यही प्रश्न कि और तो कोई युवा जोड़ों की उत्पत्ति मानता नहीं। यह प्रश्न बिना विचारे हम पर थोप दिया जाता है। बाईबल व कुरान में तो आदम हौवा की स्वर्ग में ही जोड़ी बनाकर घर-गृहस्थी भी बसा दी गई। परमात्मा ने वही हौवा को प्रसव पीड़ा का भी शाप दे दिया। क्या नन्हीं बच्ची हौवा प्रसव पीड़ा को समझती थी?

कुछ लोग विज्ञान की दुहाई देकर अमैथुनी सृष्टि पर शंका करते हैं। स्वामी वेदानन्द जी के स्थूलाक्षरी सत्यार्थ प्रकाश तथा पं. चमूपति जी के साहित्य में विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. क्लार्क का उद्धरण दे रखा है। वह स्पष्ट घोषणा करते हैं कि आदि सृष्टि के मानव चलने-फिरने, दौड़ने तथा आत्मरक्षा में सक्षम थे। तो क्या वे जवान हुए या नहीं। विज्ञान ने वेद की सच्चाई स्वीकार की या नहीं?

पूज्य पं. गंगाप्रसाद जी कुरान से प्रलय (कयामत) विषयक आयत का इस सन्दर्भ में उल्लेख करते हैं। वहाँ आता है कि कयामत आने पर मुर्दे कबरों से उठकर दौड़ने लगेंगे। वास्तव में कुरान यहाँ सृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धान्त बताता है। अज्ञानवश इसे प्रलय का दिन समझ लिया गया। भूमि से निकलकर या उठकर आदि सृष्टि के मनुष्य दौड़ने लगते हैं। कबरों में पड़े शव तो कभी के सड़-गल चुके होते हैं। मुर्दों को कबरों में नये सुगठित शरीर प्रलय की शंख सुनते ही कैसे प्राप्त हो गये? यह आयत भी अमैथुनी सृष्टि के वैदिक सिद्धान्त को स्वीकार करती है। सृष्टि की उत्पत्ति का तर्क संगत वैज्ञानिक सिद्धान्त यही है। महर्षि दयानन्द का यह बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने वैदिक सिद्धान्त को अत्युत्तम ढंग से मानव जाति के सामने रखा। हमारे नये-नये ज्ञान पिपासु युवक व लेखक यदि पुराने शास्त्रार्थ महारथियों के साहित्य का गम्भीर अध्ययन करेंगे तो उनकी शंका समाधान की शैली विकसित हो जायेगी।

**कर्नल अल्काट तथा ब्लैवेट्स्की का झूठ पकड़ा गया:**- ऋषि जीवन पर लिखते समय कई बार हम लोग कुछ विशेष उल्लेखनीय प्रसंगों की यथोचित चर्चा नहीं करते। ऐसी घटनाओं में से एक थियोसोफिकल सोसाइटी के आर्यसमाज के निकट आने तथा सम्बन्ध विच्छेद की

कहानी है। पं. लेखराम जी, श्रीयुत् लक्ष्मण जी, श्रीमान् देवेन्द्र मुखोपाध्याय जी ने इस घटनाक्रम पर बहुत योग्यता से प्रकाश डाला है, परन्तु हमारे विचार से इस विषय में श्री हरबिलास जी शारदा ने बहुत ठोस तथा विचारोत्तेजक सामग्री दी है। हमने इन सबका लाभ उठाकर लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में इस विषय पर कुछ नई खोज करके दी है। हरबिलास जी ने कर्नल तथा मैडम के छल-कपट की पोल खोलते हुए नये-नये प्रमाण जुटाये हैं। महर्षि साधु थे, बहुत सरल स्वभाव के थे, फिर भी इनके कपटजाल में न फंसे। एतद्विषयक ऋषि की दूरदर्शिता तथा सिद्धान्तनिष्ठा पर श्री हरबिलास जी ने अपनी लौह-लेखनी अच्छी चलाई है। हम यह भी बता दें कि राधास्वामी गुरु श्री शिवव्रतलाल जी ने भी भले ही संक्षेप से लिखा है, परन्तु वह भी पढ़ने योग्य है। कर्नल तथा मैडम ने अपने पापों व कपट-छल को छुपाने के लिये कई झूठ गढ़े। इनका सबसे बड़ा झूठ तो यह पकड़ा गया कि धनलोलुपता में इन्होंने अपनी संस्था की कार्यवाही में यह अंकित करने का दुस्साहस किया कि ३० अप्रैल सन् १८७९ को सहारनपुर में श्री स्वामी जी की उपस्थिति में सोसाइटी की बैठक में यह निश्चय हुआ.....।

तथ्य यह है कि ऋषिवर ३० अप्रैल को सहारनपुर में थे ही नहीं। ऋषि वहाँ पहली मई को पहुँचे थे। सब जीवनी लेखकों का इस विषय में मतैक्य है। ऋषि के पत्र-व्यवहार से भी यही प्रमाणित होता है। महर्षि के घोर निन्दक 'दयानन्द छल कपट दर्पण' के लेखक जीयालाल जैनी भी इस मनगढ़न्त कहानी के लिए कर्नल व सोसाइटी को फटकार लगाते हैं। जब जीयालाल जैनी ने कर्नल की यह पोल खोली तब तक ऋषि का कोई विस्तृत जीवन-चरित्र छपा ही नहीं था। यह प्रसंग यहाँ देने का हमारा प्रयोजन केवल यह है कि ऋषि से विश्वासघात करने वालों के ऐसे-ऐसे कुकृत्यों की हमें पोल खोलकर ऋषि की महानता का प्रकाश करने में तत्पर रहना चाहिये।

**इतिहास का वह स्वर्णिम पृष्ठः-** बालसमन्द (हिसार) के लगनशील आर्य युवक श्री यतीन्द्र को एक महिला कॉलेज ने 'महिलाओं के कल्याण के लिये आर्यसमाज की देन' पर व्याख्यान देने का निमन्त्रण दिया। आपने इस सम्बन्ध में कुछ ठोस जानकारी देने को कहा। लेखक ने उन्हें कहा कि घिसी-पिटी बातों की बजाय आप वहाँ इतिहास को नया मोड़ देने वाली घटनायें रखें। तब जो उन्हें सुझाया उसमें से तीन यहाँ दी जाती हैं। पाठक इन्हें परखें, जाँचें व तोलें।

हाफ़िज मुहम्मद इब्राहिम कांग्रेसी नेता आंध्र के राज्यपाल थे, तो उनकी अध्यक्षता में हैदराबाद में एक सर्वधर्म सम्मेलन हुआ। आर्यसमाज की प्रतिनिधि पण्डिता सुशीला विद्यालंकृता थीं। उनकी बोलने की बारी आई तो हाफ़िज जी ने कहा कि मैं आर्यसमाज के बारे में सुनता तो बहुत कुछ आया हूँ, आज मैं आर्यसमाज के प्रतिनिधि से कहूँगा कि वह हमें आर्यसमाज की दूसरों से कुछ विलक्षणता, विशेषता बतायें।

इस पर मान्या सुशीला जी ने माईक के सामने आते ही कहा, ''यह भी कोई बताने की आवश्यकता है? आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व मैं करने आई हूँ, क्या यह कोई विलक्षणता नहीं? सब मत-पन्थों का प्रतिनिधित्व पुरुष लोग कर रहे हैं, परन्तु आर्यसमाज ने एक महिला को यह सम्मान दिया है। यह आर्यसमाज की कोई छोटी विशेषता नहीं।'' सुशीला जी के इस कथन पर सभा में उपस्थित आर्यों के साथ अन्य भी अनेक लोगों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। जब हमने पहली बार यह समाचार सुना तो श्री पं. नरेन्द्र जी की दूरदर्शिता पर हमें बड़ा अभिमान हुआ।

एक दूसरी घटना लेखक ने यह बताई कि भारत के स्वराज्य संग्राम में **केवल आर्यसमाजी ही जीवित जलाये गये।** इनमें एक वीराङ्गना गोदावरी ईटेकर भी थी। यह देवी अपने पति कृष्णराव के साथ भारत की अखण्डता के लिये लड़ी, जिन्हें निजामशाही ने जीवित जला दिया। आज ढोंगी, धर्मनिरपेक्षतावादी इन बलिदानों की चर्चा ही नहीं करते। आर्य युवक सम्मेलनों तथा महिला सम्मेलनों के वक्ता व लीडरों के भी अपने रेडीमेड बनाये भाषण होते हैं। वे भी इनका नाम नहीं लेते।

एक तीसरी उल्लेखनीय घटना हमने बताने को यह सुझाई कि विश्व की प्रथम महिला जो किसी संस्था की लोकतान्त्रिक पद्धति से सर्वसम्मति से प्रधाना चुनी गईं, वह रेवाड़ी (तब रामपुरा) आर्यसमाज की श्रीमती लाड़ कँवर (पत्नी राव युधिष्ठिर सिंह) थीं। यह सन् १८८५ के आस-पास की घटना है। दोंघड़ा अहीर समाज के श्री ब्रह्मदेव जी के सौजन्य से हमने राव युधिष्ठिर सिंह का चित्र प्राप्त करके ऋषि जीवन में दे दिया है। लाड़ कँवर जी का चित्र मिलने की अब कोई आशा नहीं है। श्री यतीन्द्र जी के लिए यह नई जानकारी थी, ठोस तो है ही। आप इसे पाकर अत्यन्त हर्षित हुए। हम चाहेंगे कि परोपकारी के पाठक आर्यसमाज के स्वर्णिम इतिहास को घर-घर पहुँचायें और कुछ नया इतिहास भी रचकर दिखायें।

**प्रियवर भावेश मेरजा जी की प्रतिक्रियाः-** दिसम्बर प्रथम २०१३ के अंक में विनीत ने हरियाणा के एक निष्ठावान् आर्य की लम्बित पड़ी शंका का समाधान करते हुए आर्यजगत् के लोकप्रिय सुयोग्य लेखक प्रियवर भावेश मेरजा के कन्या महाविद्यालय विषयक लेख पर एक टिप्पणी की

थी। भावेश जी ने इसे पढ़कर परोपकारी को अपनी प्रतिक्रिया भेजी है। अपनी टिप्पणी में ही इन पंक्तियों के लेखक ने श्रीयुत् भावेश जी को एक गुणी, गवेषक, विनम्र विद्वान् लिखा था। उनके प्रति लेखक के मनोभावों को वह बहुत अच्छी प्रकार से जानते हैं।

उनका कथन है कि हिन्दी शब्दकोषों में भी गुरुकुल का अर्थ पाठशाला, विद्यालय आदि दिये हैं। भावेश जी का ऐसा विचार ठीक है, परन्तु प्रश्नकर्त्ता हरियाणा, पंजाब से है। उत्तर भारत विशेष रूप से पंजाब में गुरुकुल तथा विद्यालय को समानार्थक नहीं लिया जाता। वैसे हमें भी यह ज्ञात है कि महाविद्यालय ज्वालापुर एक विख्यात गुरुकुल रहा है। फिर भी कन्या महाविद्यालय आज भी पंजाब का एक जाना माना कॉलेज है। प्रसंग को और स्पष्ट करने की दृष्टि से ही अपनी टिप्पणी में हमने वेदकुमारी जी का नाम देना उचित समझा। भावेश जी ने बाला लिखा सो तो ठीक ही था। घटना ठीक दी गई, यह तो टिप्पणी में ही लिख दिया था। मेहता जैमिनि जी तथा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की असाधारण स्मृति की कल्पना आज के व्यक्ति नहीं कर सकते। उनका यह विचार भी सत्य है कि हमारे लिये प्रत्येक समय प्रत्येक घटना की जाँच या मिलान करना भी सम्भव नहीं। मुद्रण दोष भी कई बार गड़बड़ कर देता है। दो पंक्तियों में एक जैसे शब्द होने से कम्प्यूटरकार भूल कर सकता है। परोपकारी में छपी इस सेवक की टिप्पणी में ही चौधरी चरणसिंह तथा श्री प्रकाशसिंह बादल की पत्नी को ''इसी कन्या गुरुकुल'' की पढ़ी हुईं छप गया, जबकि **कन्या महाविद्यालय** लिखा था। अब प्रसंगवश यह बता दें कि कहानीकार सुदर्शन जी की पत्नी तथा महाशय राजपाल जी की पत्नी भी इसी कन्या महाविद्यालय जालन्धर से श्री लाला देवराज जी की अमिट छाप लेकर निकली थीं। हमने श्रीयुत् बलवानसिंह व श्रीमान् भावेश जी के पत्र पाकर इतिहास के कुछ पृष्ठों का अनावरण करने का अवसर पाया। हम उनके आभारी हैं।

**कभी सोचा भी नहीं था:**- स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने एक बार एक शिविर में हमें सीख दी थी कि युवकों के आर्यकरण में लगे रहो। जो सम्पर्क में आयेंगे, वे सभी कुछ बन जायेंगे- ऐसा मत सोचना और सभी बहुत कर्मठ महारथी बनेंगे, यह भी आशा मत करना। बिना डिब्बों के रेल नहीं होती। सैंकड़ों डिब्बे किस काम के यदि एक इञ्जन न हों और उस इञ्जन का क्या करें जिसके साथ डिब्बे न हों, इसलिये जहाँ डिब्बे (साधारण कार्यकर्त्ता) तैयार करो वहाँ कुछ इञ्जन भी बनाने पर ध्यान दो। इञ्जन से स्वामी जी का अभिप्राय था संगठन की कला का कलाकार। स्वामी जी के इस आदेश-सन्देश का समाजसेवी मूल्याङ्कन करें।

श्री धर्मवीर जी ने आर्यसमाज के संगठन की सुदृढ़ता के लिए ओम् मुनि जी को व लेखक को कहा कि जो युवक ऋषि मेले पर आते हैं, इन्हें यह प्रबल प्रेरणा दें कि वे निरन्तर सेवारत् रहें। निरन्तरता के परिणाम दूरगामी होते हैं। क्षणिक जोश व महत्त्वाकांक्षायें पालकर कोई समाज का हित नहीं कर सकता। जिन्होंने इस सीख को अंगीकार किया, उन्होंने कुछ कर दिखाया। हमने सोचा भी नहीं था कि दो तीन वर्ष की अवधि में ये इतना कुछ कर दिखायेंगे। हम अपनी प्राप्ति पर इतरा तो नहीं सकते, परन्तु हमें इस पर अत्यन्त सन्तोष है। इतिहास कुछ आगे सरका है। लोकैषणा की सर्पिणी हमारे नवोदित आर्यवीरों को डस न जाये, सो संक्षेप से कुछ संकेत (प्रेरणा के लिये) दिये जाते हैं। पं. लेखराम वैदिक अभिलेखागार मण्डली को एक कार्य सौंपा। इस टोली ने स्वल्पकाल में जो कार्य कर दिखाया है, वह जब आर्यजगत् जानेगा तो इन आर्यवीरों की पीठ अवश्यमेव थपथपायेगा।

श्री जितेन्द्र कुमार गुप्त (वकील भठिण्डा) पं. चमूपति जी के कुछ लेखों के लिये बहुत दबाव डाल रहे थे। इन युवकों ने इस दिशा में पर्याप्त सफलता प्राप्त करके हमारी निराशा को आशा में बदल दिया है। हम हिम्मत हार चुके थे कि सत्यामृत प्रवाह तथा दयानन्द छल-कपट दर्पण अब हाथ नहीं लग सकते, परन्तु श्री राहुल ने ठीक समय पर ये उपलब्ध करवा दिये। श्री मनोज आर्य काम पूछा करते थे। हमने ऋषि जीवन के लिये उसे दो कार्य सौंपे। ऐसा तो नहीं सोचा था कि मनोज इन कार्यों को इतनी उत्तमता से कर दिखायेगा। सम्भवतः कोई भी प्रान्तीय सभा इन कार्यों में कुछ सहयोग कर पाती।

परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओम् मुनि आर्यवीर दल की उपज हैं। वैद्य रविदत्त जी सरीखे आर्य नेता ने इनका निर्माण किया। आप कोई गवेषक तो नहीं हैं, पर इनकी श्रद्धा व लगन तथा अनुभव का लाभ जो मिला है, वह आर्य युवकों के लिए एक उदाहरण है। राजस्थान से सम्बन्धित ऋषि जीवन के कुछ प्रश्न लेखक ने इनके सामने रखे। पाठक यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि ओम् मुनि जी ने इन युवकों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। आपको कहा गया कि आबू में ऋषि जी के पालकी की व्यवस्था करने वाले हरनामदास ओवरसियर का अता-पता खोज कर दें। इन्हीं को पं. लेखराम जी ने हरनामसिंह लिखा है। आप ऐसे कई कामों में जुट गये। सप्रमाण खोज करके दिखा दी कि हरनामदास जी ब्यावर आर्यसमाज के संस्थापकों में से एक थे। पाठक शीघ्र इस विषय में ओम् मुनि जी का लेख पढ़ेंगे। ऋषि द्रोही जगन्नाथ मुरादाबादी की एक कृति आपने खोजकर दी है। इस पुस्तक में उसने

वैदिक-धर्म का, ऋषि का गुणगान किया है। यह कृति हमें बड़ा काम दे सकती है।

हमारा मत है कि हरनामदास जी ऋषि के पूर्व परिचित थे। पं. लेखराम जी के ग्रन्थ में दिये गये दो शब्दों से यही निष्कर्ष निकलता है। वह राजस्थानी थे। शाहपुरा से भी उनका कुछ सम्बन्ध था। उत्साही आर्यवीर इस दिशा में कुछ करेंगे तो नई-नई जानकारी मिल सकती है। आवश्यकता है कि अजमेर में सभा के पास सुरक्षित रहे। अलभ्य स्रोतों पर कुछ सुयोग्य युवक ध्यान दें। सेवक भी वर्ष में चार बार अजमेर कुछ समय लगायेगा। पं. शान्तिप्रकाश जी के रजिस्टरों पर काम करने वाले आगे आयें। अभी तो अग्निहोत्री डेमोलिशेड पुस्तक पर कार्य करने की किसी ने हमारी विनती स्वीकार नहीं की। सभा के पास बहुत पत्र-पत्रिकायें सुरक्षित कर दी गई हैं। शीघ्र ही और पुरानी पत्रिकायें पहुँचा दी जायेंगी।

उदयपुर, जयपुर और जोधपुर में हमारे कई युवक हैं, जिन्हें आगे आना होगा। जयपुर में पं. वासुदेव जी ने कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का बंगला भाषा में अनुवाद करके छपवा दिया है। आप संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी व बंगला के अच्छे विद्वान् हैं। समाज इनके बारे में सोचे और ये निरन्तर समाज के लिये सोचें। समय भयङ्कर है, परन्तु समय को साहसी शूर-नर ही बदला करते हैं।

**दंगों का दुःखद इतिहासः-** शरद पवार जी को पार्टी के एक नवाब जी दूरदर्शन पर बोलते-बोलते गुजरात दंगों पर रटा-रटाया सर्मन (उपदेश) देने लग गये। दंगों की चर्चा और इतिहास दुःखद ही है। आश्चर्य इस बात पर होता है कि गाँधी युग में भी गोधरा में कभी दंगे हुए। हिन्दुओं पर भारी विपत्ति आई। एक सुयोग्य परोपकारी आर्य नेता का बलिदान हुआ। गोधरा के उस प्राणवीर की हत्या की चर्चा कोई नहीं करता। शेख अब्दुल्ला की मुस्लिम कान्फ्रेंस (नेशनल कान्फ्रेन्स तो बाद में बनी) ने सन् १९३२ में हिन्दुओं, सिखों के घर-बार फूँके। तब दंगों में अनेक निर्दोषों की हत्यायें हुईं। नवाखली के दंगों में पूर्वी बंगाल में नरसंहार जब हुआ था, तब नेहरू जी प्रधानमन्त्री थे और मुस्लिम लीग सरकार में कांग्रेस के साथ थी। कोलकाता के डायरेक्ट एक्शन में मुस्लिम लीग ने क्या उत्पात मचाया था? हैदराबाद में कांग्रेस की सहयोगी मजलिस व उसके रजाकारों ने कितने देशभक्तों को जीवित जलाया, हत्यायें की और कितने ग्रामों को फूँका- यह इतिहास क्यों नहीं सुनाया जाता? मालाबार में हिन्दुओं का नरसंहार कांग्रेस के खिलाफत आन्दोलन की देन था या नहीं। पंजाब में जो भीषण आतंकवाद आया और दिल्ली में सिखों की हत्यायें हुईं, इन सब दंगों को तो ये ढोंगी शान्तिदूत और अहिंसावादी भूल गये। बस गुजरात के दंगे की गरदान करना फैशन बन गया है।

**वेद सदन, अबोहर-१५२११६ (पंजाब)**

---

**पृष्ठ संख्या ५ का शेष भाग....**

वास्तविकता तो यह है कि पिछले वर्षों में स्वामी रामदेव ने जो भ्रष्टाचार के विरोध में जो आन्दोलन वर्षों के प्रयास से खड़ा किया था। जिसके प्रभाव ने रामलीला मैदान में एक लाख लोगों को एकत्र कर जन आन्दोलन का रूप दिया था, उसे अरविन्द केजरीवाल ने अन्ना को जन्तर-मन्तर पर बैठा कर स्वामी रामदेव से झटक लिया और अन्ना को छोड़ आन्दोलन को अपने साथ जोड़कर दिल्ली की सत्ता तक पहुँच गये। यदि केजरीवाल आम आदमी हैं, वे आदमी की पीड़ा समझते हैं तो शिक्षा और प्रशासन में आम आदमी की भाषा लाकर आम आदमी को इस भ्रष्टाचार से मुक्ति दिला सकते हैं। अरविन्द केजरीवाल ने भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन में उन सबको ठगा है, जो भ्रष्टाचार समाप्ति की आशा से उनके साथ आये थे। आज वे सोचते होंगे कि उन्हें कैसे मूर्ख बनाया गया। नीतिकार ने ठीक ही कहा है-

**प्रथमस्तावदहं मूर्खः द्वितीयो पाक्षबन्धकः,**
**ततो राजा च मन्त्री च सर्वं वै मूर्खमण्डलम्।**

- धर्मवीर

## दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
**IFSC-SBIN0007959**

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
**IFSC-IBKL0000091**

email : psabhaa@gmail.com

**मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

# वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहे हैं, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला २०१४ दिल्ली में प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

**सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१.** यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में होगी। लागत मूल्य ५०/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग २०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ३०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी से इतर (अन्य) भाषियों के लिए सी.डी.या डी.वी.डी. के माध्यम से उपलब्ध करवाया जायेगा। इस डी.वी.डी. में लगभग १८ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश होगा। लागत मूल्य लगभग २५/- होगा। **४.** संक्षिप्त ऋषि जीवन चरित्र अंग्रेजी में। लागत मूल्य १०/- रुपये।

**नोट**-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो। जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

**नोट**-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
**IFSC-SBIN0007959**

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
**IFSC-IBKL0000091**
email : psabhaa@gmail.com

**नोट :** इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

**सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

# अहिंसा परमो धर्मः

– ब्र. राजेन्द्रार्य

मानव धर्मशास्त्र के प्रणेता महर्षि मनु ने धर्म के सम्बन्ध में कहा है–

**वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।**
**एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।**

–मनुस्मृति २/१२

वेद, स्मृति, सत्पुरुषों का आचार और अपने आत्मा के ज्ञान से अविरुद्ध प्रियाचरण, ये चार धर्म के 'लक्षण' अर्थात् इन्हीं से धर्म लक्षित होता है।

**धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।**
**धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।**

–मनुस्मृति ६/९२

अर्थात् धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी (बुद्धि), विद्या, सत्य और अक्रोध–धर्म के ये दस लक्षण हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'मनुस्मृति' में वर्णित धर्म के दस लक्षणों के साथ अहिंसा को और जोड़कर संस्कारविधिः और पूना प्रवचन= उपदेश मञ्जरी के तृतीय प्रवचन में धर्म के ग्यारह लक्षण दर्शाये हैं। 'धर्म' शब्द '**धृ धारणपोषणयोः**' धातु से बना है, जिसका अर्थ है धारण और पोषण करना, अर्थात् पदार्थ के धारक और पोषक तत्त्व को धर्म कहते हैं। जिसका अभिप्राय है जिन तत्त्वों से पदार्थ का अस्तित्व है वही तत्त्व उस पदार्थ का धर्म है। '**वस्तुस्वभावो धर्मः**' अर्थात् वस्तु का जो स्वभाव है, वही उसका धर्म है। जैसे– अग्नि का स्वभाव 'उष्णता'। यदि अग्नि में से उष्णता को निकाल दिया जाय तो अग्नि 'अग्नि' न रहकर राख हो जायेगी अतः उष्णता अग्नि का धर्म हुआ।

जिस प्रकार पदार्थ का अपना एक धर्म होता है, उसी प्रकार मनुष्य का भी एक धर्म है। महाभारत में वेदव्यास ने कहा है– '**धारणात् धर्मं इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजा**' अर्थात् धारण करने के कारण इसे धर्म कहते हैं, अतः धर्म ही प्रजा का धारण करता है। कहने का तात्पर्य है कि धर्म ही मनुष्य का मूलतत्त्व है। नीतिकार का भी कथन है–

**आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।**
**धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।**

अर्थात् भोजन करना, नींद लेना, भयभीत होना तथा सन्तान पैदा करना, ये सब क्रियाएँ तो मनुष्यों में पशुओं के समान पायी जाती हैं। मनुष्यों में धर्माचरण ही एक ऐसा कार्य है, जो उनको पशुओं से अलग करता है। अतः जो मनुष्य शरीर धारण करके धर्माचरण नहीं करता, वह तो पशुसमान ही होता है। धर्म जिज्ञासा एवं धर्म ज्ञान की पात्रता रखने वाले मनुष्यों के लिए महर्षि मनु महाराज कहते हैं–

**अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।**
**धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।**

–मनु. २/१३

''परन्तु जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात् विषय-सेवा में फंसा हुआ नहीं होता, उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करें उनके लिए वेद ही परम प्रमाण है।'' – सत्यार्थ प्रकाश, दशम समुल्लास

''जो मनुष्य सांसारिक विषयों में फंसे हुए हैं उन्हें धर्म का ज्ञान नहीं हो सकता। धर्म के जिज्ञासुओं के लिए परम प्रमाण वेद हैं।'' – पूना प्रवचन, पृष्ठ १०५

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की पवित्र भूमि गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक ग्राम में १२ फरवरी सन् १८२५ को स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। स्वामी दयानन्द ने सन् १८६० से १८६३ तक गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द की पाठशाला मथुरा में आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन प्राप्त किया। दण्डी जी दयानन्द के गुणों पर विचार करके शिष्यों को प्रायः यह कहा करते थे, ''यदि मेरे कार्य को कोई करेगा तो दयानन्द ही करेगा।'' समावर्तन तथा गुरु दक्षिणा के समय अकिञ्चन संन्यासी विद्यार्थी दयानन्द प्राचीन ऋषियों की आर्ष प्रणाली के अनुसार आधा सेर लौंग की भेंट लिए गुरु जी के चरणों में उपस्थित हुआ। भेंट धरकर विनम्रता पूर्वक करबद्ध प्रार्थना की, ''महाराज मुझे अब विदा होने की आज्ञा दीजिए।''

दण्डी गुरु जी ने कहा– दयानन्द जाते तो हो विद्या समाप्ति की सफलता की दक्षिणा देना धर्म है। दयानन्द ने कहा– जो आपकी आज्ञा हो, मैं उपस्थित हूँ। दण्डी गुरु जी जिनको किसी भी सांसारिक पदार्थ की लालसा नहीं थी, बोले– ''बेटा इस विद्या को सफल करके दिखाओ। देश का उपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ तथा वैदिक धर्म को फैलाओ। मैं तुमसे यही दक्षिणा माँगता हूँ।''

दयानन्द ने इस दक्षिणा के महत्त्व पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया। अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से गुरु जी का अभिवादन करते हुए कहा– ''गुरुवर! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मैं आयुपर्यन्त इसके लिए यत्नशील रहूँगा।'' इस पर दण्डी ने कहा– ''बेटा! ईश्वर आपके साहस, प्रयास व पुरुषार्थ

को बढ़ावें। मैं आपको यही आशीर्वाद देता हुआ अन्त में तुम्हारे भावी जीवन में मार्गदर्शन के लिए यह सिद्धान्त फिर से कहे देता हूँ कि मनुष्यकृत ग्रन्थों में परमेश्वर व ऋषियों की निन्दा है। ऋषिकृत ग्रन्थों में ऐसा नहीं है। इस कसौटी को कभी हाथ में से न जाने देना।'' दयानन्द ने बड़ी विनम्रता पूर्वक श्रद्धा व भक्ति के साथ लगभग २० वर्ष तक इस गुरुदक्षिणा को चुकाने के लिए प्रयत्नशील रहे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विशुद्ध वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार, लेखन, शास्त्रार्थ व प्रवचनों के माध्यम से किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती अहमदाबाद से प्रस्थान करके ३१ दिसम्बर सन् १८७४ को राजकोट जब पहुँचते हैं। तब राजकुमार पाठशाला के राजकुमारों व प्राचार्य मेकनाटेन महोदय ने एक दिन कॉलेज में पधारने तथा व्याख्यान देने की विनती की। महर्षि ने कॉलेज में 'अहिंसा परमो धर्मः' विषय पर व्याख्यान दिया। ऋषि दयानन्द ने कहा था- मांस भक्षण पाप है। इस पर प्रिंसिपल ने कहा, तो क्या सब राजकुमार नरक में जाएँगे? ऋषि दयानन्द ने कहा कि मांस भक्षण इसलिये पाप है, क्योंकि यह बिना हिंसा के नहीं मिलता। हिंसक प्राणियों की हिंसा (शिकार) हिंसा रोकने के लिए विहित है। ऋषि का उत्तर पाकर प्रिंसिपल निरुत्तर हो गये।

महर्षि दयानन्द ने स्व विवेक बुद्धि से ऋषियों की मान्यतानुसार अहिंसा को एकादश धर्म का लक्षण बतलाया।

महर्षि मनु महाराज ने मांस-भक्षण प्रसंग में आठ प्रकार के पापियों की गणना बतलायी है-

**अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।**
**संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः।।**

-मनु. ५/५१

अर्थात् - (अनुमन्ता) मारने की आज्ञा देने वाला, (विशसिता) मांस काटने वाला, (निहन्ता) पशु को मारने वाला (क्रय-विक्रयी) पशुओं को मारने के लिए मोल लेने और बेचने वाला (संस्कर्ता) पकाने वाला (उपहर्ता) परोसने वाला (च) और (खादकः) खाने वाला (इति घातकाः) ये सब हत्यारे और पापी हैं।

स्वामी दयानन्द ने 'गोकरुणानिधि' ग्रन्थ में लिखा है- ''अनुमति= मारने की आज्ञा देने, मांस काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस के पकाने, परोसने और खाने वाले आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं।'' (दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह गोकरुणानिधि, पृ. ४११)

महर्षि दयानन्द की अहिंसा अथर्ववेद के '**सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः**' आदि मन्त्र के 'अविद्वेषम्' पद के आधार पर है। प्रतिदिन की सन्ध्या में भी '**योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः**' (अथर्ववेद ३/२७/१-६) वाक्य को छः बार दुहराकर उपासक इसी द्वेषवृत्ति से मुक्त रहने की प्रार्थना करते हुए कहता है कि- 'हे परमात्मन्! यदि कोई व्यक्ति मुझसे द्वेष करता है, उसे हम आपको समर्पित करते हैं। आपकी न्याय-व्यवस्था ही उसका निर्णय करे।'

आज के वैज्ञानिक युग में देश-विदेश में इलेक्ट्रानिक एवं प्रिन्टमीडिया के माध्यम से योगाचार्यों द्वारा योग विद्या का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, जिससे मानव सुख, शान्ति को प्राप्त कर सके। अधिकतर योगाचार्य महर्षि पतञ्जलि द्वारा बतलाये गये योग के अङ्गों यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) व नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान) की चर्चा नहीं करते हैं। जबकि महर्षि पतञ्जलि का कथन है कि योगाभ्यासी के लिए इनका पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। ये योगाभ्यासी के लिए प्रारम्भिक सीढ़ियाँ हैं। यमों के अन्तर्गत ही अहिंसा का वर्णन आया है। महर्षि पतञ्जलि ने अहिंसा आदि को सार्वभौम महाव्रत कहा है-

**जातिदेशकालसमयानवच्छिनाः सार्वभौमा महाव्रतम्।**

-योगदर्शन २/३१

अर्थात् जाति, स्थान, काल और समय की सीमा से रहित सब अवस्थाओं में पालन करने योग्य अहिंसा आदि महाव्रत हैं।

अहिंसा के सन्दर्भ में योग दर्शन २/३० सूत्र के व्यास भाष्य में कहा गया है-

तत्राहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोहः, उत्तरे च यमनियमास्तन्मूलास्तत्सिसिद्धपरतयैव तत्प्रतिपादनाय प्रतिपाद्यन्ते, तदवदातरूपकरणायैवोपदीयन्ते। तथा चोक्तम्- स खल्वयं ब्राह्मणो यथा यथा व्रतानि बहूनि समादित्सते तथा तथा प्रमादकृतेभ्यो हिंसानिदानेभ्यो निवर्तमान-स्तामेवावदातरूपामहिंसां करोति।

अर्थात् उन (यमों) में से सब प्रकार से सब कालों में समस्त भूतों को पीड़ा न देना 'अहिंसा' है। अगले यम-नियम अहिंसा मूलक हैं। अर्थात् अहिंसा पर आश्रित हैं। उस (अहिंसा) की सिद्धि के लिए होने के कारण उसकी सिद्धि के लिए शेष यम और नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। उस (अहिंसा) को निर्मल करने के लिए ही अपनाये जाते हैं। और वैसा कहा है- निश्चय ही वह यह ब्राह्मण (योगी) जैसे-जैसे बहुत सारे व्रतों को अपनाता जाता है वैसे-वैसे असावधानी के कारण होने वाले हिंसा के कारणों से निवृत्त होता हुआ उसी उच्च स्तर की अहिंसा का (आचरण) करता है।

पूज्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी अपने ग्रन्थ योगार्थ

प्रकाश में अहिंसा के बारे में लिखते हैं–

सर्वथा, सर्वदा सभी प्राणियों के साथ वैरभाव को छोड़कर प्रीति से वर्तना अहिंसा है। यदि किसी व्यक्ति को चोरी आदि अशुभ कर्म करने पर उसके सुधार के लिए और अन्यों के उपकार के लिये प्रेमपूर्वक उचित दण्ड दिया जाता तो वह अहिंसा है, हिंसा नहीं। माता, पिता, आचार्य आदि बालक–बालिकाओं को दोषों से दूर करने के लिये और उनको गुणवान बनाने के लिये प्रेमपूर्वक उनको उचित दण्ड देते हैं तो वह हिंसा नहीं अहिंसा है। इसी प्रकार से अहिंसा के विषय में सर्वत्र जानना चाहिये। अहिंसा का पालन करने से व्यक्ति अपने सूक्ष्म दोषों को जानने में और उनको दूर करने में समर्थ हो जाता है।

जो प्राणी अहिंसा के साधक योगी का सान्निध्य करते हैं, उनका वैरभाव छूट जाता है। महर्षि पतञ्जलि कहते हैं–

**अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।**

– योगदर्शन २/३५

अर्थात् जब अहिंसा धर्म निश्चय हो जाता है तब उस पुरुष के मन से वैरभाव छूट जाता है, किन्तु उसके सामने व उसके संग से अन्य पुरुष का भी वैरभाव छूट जाता है।

वेदों एवं प्राचीन ऋषियों की शिक्षाओं का जो मनुष्य अपने आचरण में उतारने का प्रयास करते हैं उन्हें ही जीवन में सुख–शान्ति की अनुभूति प्राप्त होती है तथा अपने जीवन के महान् लक्ष्य परमात्मदर्शन से मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेद में स्पष्ट निर्देश है–

**यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।**
**सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।।**

– यजुर्वेद ४०/६

जो मनुष्य आत्मा अर्थात् परमात्मा में तथा अपने आत्मा के सदृश समस्त जीव और जगत् के जड़ पदार्थों को अनुकूलता से अथवा धर्माचरण और योगाभ्यास आदि से देखता है और समस्त प्राणियों और प्रकृतिस्थ पदार्थों में सर्वत्र व्याप्त परमात्मा को देखता है ऐसे सम्यक् दर्शन के बाद वह संशय को प्राप्त नहीं होता अर्थात् संशय रहित होकर निर्भ्रम ज्ञान से परमात्मपद=मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। उसे संसार और परमात्म–ज्ञान के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहता।

काश! राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, ऋषि दयानन्द के अनुयायी अपने क्रियात्मक जीवन में मांस भक्षण आदि दुर्व्यसनों का परित्याग कर अहिंसा के उपासक बन सकें तो इससे जहाँ प्राचीन वैदिक धर्म–संस्कृति की रक्षा होगी वहीं साथ में अपने भारत राष्ट्र का आर्थिक दृष्टि से भी उत्थान होगा। मनु महाराज का स्पष्ट मत है कि जो व्यक्ति धर्म का जीवन बिताना चाहता है, उसे अहिंसाशील होकर सब प्राणियों का कल्याण करना चाहिए और सबके साथ मीठी और अच्छी वाणी का प्रयोग करना चाहिए–

**अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।**
**वाक् चैव मधुराश्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता।।**

– मनुस्मृति २/१५९

**आर्यसमाज शक्तिनगर, जनपद–सोनभद्र–२३१२२२**
**(उ.प्र.) चलभाष–०९४५०९५१९४६**

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
**IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
**IFSC - SBIN0007959**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

# योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

## दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

### प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

**प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ**–मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व

शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

**ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से ( वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा ) सर्वदा सुलभ रहते हैं।**

**-संयोजक**

## परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

**१.** ११ से १५ मार्च,२०१४ में होने वाली **सन्ध्या गोष्ठी** स्थगित की गई है। पुन: निर्धारण होने पर सूचित किया जायेगा।

**२.** १३ से २० अप्रैल, २०१४ **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

**३.** १६ से २३ मई, २०१४ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

**४.** २४ से ३१ मई, २०१४ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४७०९४९४

**५.** १ से ८ जून, २०१४ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

**६.** १५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर ( द्वितीय स्तर ),** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

**विशेष**- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

## ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

**सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल**-psabhaa@gmail.com

## ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

१३ से २० अप्रैल, २०१४, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। १३ अप्रैल सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन २० अप्रैल को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

**विशेष**- प्रतिभागी अपना आवेदन १५ मार्च २०१४ तक भेज देवें जिसमें कि नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता, अपना चित्र, दूरभाष संख्या स्पष्ट लिखा हो। स्वीकृति मिलने पर ३० मार्च तक अपना शुल्क अवश्य ही जमा करवाकर अपना पंजीयन करवा लेवें।

५० की सीमित संख्या में प्रथम पंजीयन करवाने वाले को ही शिविर में भाग लेने की अनुमति होगी।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१।ईमेल-psabhaa@gmail.com

## अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

।।ओ३म्।।

# अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

# लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

**-संपादक**

# काकोरी षड्यन्त्र केस

## ( क्रान्तिकारी, जो केस में शामिल थे )

- शचीन्द्रनाथ बक्शी

काकोरी षड्यन्त्र केस अपने समय का सबसे बड़ा क्रान्तिकारी मुकदमा था। इस मुकदमे में २० देशभक्तों को सजा मिली थी। रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी दे दी गई और वे शहीद हो गये। शचीन्द्रनाथ सान्याल और शचीन्द्रनाथ बक्शी को आजन्म काले पानी की सजा मिली। मन्मथनाथ गुप्त को १४ साल, राजकुमार सिंह, रामकृष्ण शास्त्री और योगेश चटर्जी आदि को १०-१० साल और शेष को ७-७ साल और ५-५ साल की सजाएँ दी गईं थी। अपील में कुछ लोगों की सजाएँ बढ़ाई गई थी।

इस मुकदमे में हमें फंसाने के लिये सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लाखों रुपया देकर सरकार ने सबसे अच्छे वकीलों को नियुक्त किया। स्पेशल मजिस्ट्रेट, स्पेशल जज भी नियुक्त किये गये। सफाई के लिये प्रभावशाली डिफेन्स कमेटी बनाई गई थी, जिसमें पण्डित मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, गोविन्दवल्लभ पन्त, मोहनलाल सक्सेना आदि थे। सफाई के वकीलों में कोलकाता के प्रसिद्ध बैरिस्टर चौधरी लखनऊ के प्रोफेसर कृपाशंकर हजेला, हरकरणनाथ मिश्र तथा उत्तर प्रदेश के (बाद में मुख्यमन्त्री) चन्द्रभानु गुप्त भी थे। इस षड्यन्त्र केस का काकोरी केस के नाम से मशहूर होने का आधारभूत कारण यह था कि हरदोई, लखनऊ के आस-पास जिस स्टेशन के पास पैसेन्जर ट्रेन को रोककर रेलवे खजाना लूटा गया था, उस स्टेशन का नाम काकोरी था। लखनऊ के स्पेशल मजिस्ट्रेट तथा स्पेशल जज ने इस अप्रसिद्ध छोटे से स्टेशन को इतिहास के पन्ने पर लाकर बैठा दिया। ९ अगस्त १९२५ के दिन ८ डाऊन पैसेन्जर ट्रेन गार्ड जगन्नाथ प्रसाद के चार्ज में थी। ट्रेन डकैती से सम्बन्धित सरकारी गवाहों में जिसने सर्वाधिक समय तक क्रान्तिकारियों को देखा था, वह था गार्ड जगन्नाथ प्रसाद सिंह। वह डकैती शुरू होने के वक्त से लगातार पैंतीस मिनट तक देखता रहा। शेष गवाहों में से किसी ने भी हमें दो चार सैकेण्ड से ज्यादा नहीं देखा। कुछ लोगों ने हमें डकैती शुरू होने से पहले साधारण मुसाफिर की स्थिति में कुछ क्षणों तक देखा।

**वस्तुतः घटना इस प्रकार थीः**- सन् १९२५ तक उत्तर प्रदेश में क्रान्तिकारी संगठन मजबूत हो गया था और संगठन में तेजी भी आ गई थी। जुलाई के अन्त में हमें खबर मिली कि जर्मनी से पिस्तौलों का चालान आ रहा है। कोलकाता बन्दरगाह पर पहुँचने से पहले ही नकद रुपया देकर उसे प्राप्त करना था। एतदर्थ काफी रुपयों की आवश्यकता पड़ी और पार्टी के सामने डकैती के अलावा कोई चारा नहीं था। चूँकि पार्टी निर्णय कर चुकी थी कि भविष्य में किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं लूटी जायेगी। इसलिये लखनऊ के पास ट्रेन रोकर सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई गई। इसकी रूपरेखा सुनकर नौजवानों की तबीयत फड़क उठी। उन दिनों नौजवान साथी बहुत चंचल हो उठे थे और कुछ कर गुजरने के लिये उतावले हो रहे थे। **सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है**,.... ये गाने लग गये थे और उनका मन इसी ऊँचे स्वर में बन्ध गया था। मुझे स्पष्ट याद है कि साथियों में मन्मथनाथ गुप्त, कुन्दनलाल गुप्त, चन्द्रशेखर आजाद आदि ने मेरे सामने प्रश्न उठाया था कि अगर रेल का गार्ड अंग्रेज हुआ तो क्या उसे जिन्दा छोड़ा जायेगा? जब साथियों ने खुशियाँ जाहिर करनी शुरू की तब मैंने अपने होठों पर एक अंगुली रख कर उन्हें रोककर कहा था- ''चुप, यह बात अपने में ही रखनी चाहिये। यदि रामप्रसाद को इसका पता चल गया और कहीं उन्होंने मना कर दिया तो सारा करा-कराया बंटाधार हो जायेगा।''

यहाँ पर मैं यह बताना उचित समझता हूँ कि हम क्रान्तिकारी लोग इतने खूंखार नहीं थे। बात दरअसल यह थी कि अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हमारे मन में संवेदना इतनी तीव्र थी कि बदला लेने की भावना सदा जागृत रहती थी। हम लोगों में अकेले अशफाक उल्ला खाँ ने इस योजना का विरोध किया था और आखिर तक करते रहे। उनका कहना था कि हमारा दल अभी इतना मजबूत नहीं है कि हम ब्रिटिश सरकार को खुली चुनौती दे सकें। लेकिन कोई इस चेतावनी को सुनने के मूड में न था। अशफाक यही रट लखनऊ तक लगाते रहे और काकोरी स्टेशन पर पहुँच कर भी रामप्रसाद से बोले- 'मान जावो राम, अब भी लौट चलो, यह काम नहीं होना चाहिये।'

नतीजा यह हुआ कि डकैती का काम शुरू करने का भार रामप्रसाद ने मेरे ऊपर डाला। मैंने रामप्रसाद को बताया

कि अशफाक और राजेन्द्र लाहिडी के साथ लेकर मैं सैकेण्ड क्लास की जंजीर खींच कर ट्रेन रोक दूँगा तथा उतर कर गार्ड को पकड़ लूँगा। रामप्रसाद ने इस सुझाव को पसन्द किया और बताया कि वह बचे हुए छ: साथियों को लेकर तीसरे दर्जे में बैठेंगे और ट्रेन रुकने पर हम लोगों से आ मिलेंगे।

जब मैंने काकोरी स्टेशन पर लखनऊ के लिये सैकेण्ड क्लास के तीन टिकट खरीदने के लिये नोट बढ़ाया तब असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर घूमकर मेरे चहरे को गौर से देखने लगा। उसे महान् आश्चर्य हुआ कि इस छोटे से स्टेशन से तीन सैकेण्ड क्लास के टिकट खरीदने वाला यह व्यक्ति कौन है? मेरे हाथ में रुमाल था और अनायास ही दूसरी ओर मुंह फेर कर रुमाल से मुंह पोंछने लगा। जब उसने मुझे तीन टिकट और बचे पैसे वापिस लौटाये, उस वक्त भी वह घूर-घूर कर देखता रहा किन्तु मैंने उसे फिर भी मौका नहीं दिया और मुंह पोंछते हुए ही एक हाथ से टिकट और पैसे लेकर आगे चल दिया। मैंने प्लेटफार्म पर आकर अशफाक और राजेन्द्र को इशारे से बुलाया तथा उन्हें अपने साथ ही रहने के लिये कहा। पैसेन्जर ट्रेन आई। हम तीनों सैकेण्ड क्लास का खाली डिब्बा देख कर बैठ गये। गाड़ी चल दी। इतने में एक मुसाफिर मेरे पास आकर बैठ गया। मैं फौरन घूमकर जंगले के बाहर देखने लगा। सामने के बर्थ पर अशफाक और राजेन्द्र बैठे थे। डिब्बे में बिजली की रोशनी हो रही थी। जब ट्रेन सिग्नल के पास पहुँच गई, मैंने अपने साथियों की तरफ मुखातिब होकर पूछा- ''जेवरों का बक्सा कहाँ रह गया है?'' अशफाक ने तुरन्त जवाब दिया- 'ओ हो, वह तो काकोरी में ही छूट गया है।' इतने में मैंने अपने पास लटकती हुई जंजीर खींच दी। मेरे बाद राजेन्द्र लाहिडी ने भी अपने पास की जंजीर खींच दी। जंजीर खींचने के बाद मैं फौरन उठकर दरवाजा खोला और बाहर खड़ा हो गया।

गाड़ी रुक गई। हम तीनों उतर पड़े तथा काकोरी की तरफ चल पड़े। तीन चार डिब्बों को पार करने पर गार्ड साहब मिले, जो हमारी तरफ आ रहे थे, उन्होंने पूछा ''जंजीर किसने खींची?'' मैंने चलते-चलते बताया कि मैंने खींची है। गार्ड मेरे साथ हो लिया और उसने मुझे रुकने को कहा। उत्तर में मैंने बताया- ''काकोरी में हमारा जेवरों का बक्सा छूट गया है, हम उसे लेने जा रहे हैं।''

इतने में हम लोग गार्ड के डिब्बे तक पहुँच कर रुक गये। तब तक हमारे अन्य साथी भी वहाँ तक पहुँच गए थे। हमने पिस्तौल के फायर के साथ मुसाफिरों को आगाह किया कि कोई मुसाफिर न उतरे, क्योंकि हम सरकारी खजाना लूट रहे हैं। इतने में मेरी निगाह गार्ड साहब पर पड़ी जो मेरे बगल में ही खड़े थे और इंजन की तरफ हरी बत्ती दिखा रहे थे। मैंने उनकी पसली में पिस्तौल की नली लगा दी और एक हाथ से उनकी बत्ती छीन ली। बत्ती को जमीन पर पटकते हुए मैंने उसे ठोकर मारते हुए अलग फेंका और गार्ड से कहा- ''गोली मार दूँगा। हरी बत्ती क्यों दिखा रहा था?'' गार्ड जगन्नाथ प्रसाद ने हाथ जोड़ते हुए गिड़गिड़ाकर कहा- ''हुजूर, मेरी जान बक्श दीजिये।'' मैंने उसे डांट कर कहा- ''घास पर लेट जाओ। तब तक घास से न उठो, जब तक मैं न कहूँ। यदि बीच में उठे तो जहन्नुम रसीद कर दिये जावोगे।'' गार्ड तुरन्त घास पर लेट गया। तब तक लोहे का सन्दूक गार्ड के डिब्बे से धकेलकर नीचे गिरा दिया गया और उसे तोड़ा जाने लगा। मैं डिब्बे के पायदान का सहारा लेकर गार्ड की ओर पिस्तौल ताने खड़ा रहा। मेरे ऐसे पाँच मिनट तक खड़ा रहने के बाद रामप्रसाद ने एकाएक मेरा हाथ पकड़ कर अंधेरे में खींच लिया और कहा- ''कर क्या रहे हो? सारी रोशनी तुम्हारे चेहरे पर पड़ रही है, जबकि और सब साथी अंधेरे में हैं।'' मैं तब गार्ड के डिब्बे में चढ़ गया और बत्तियाँ बुझाने की कोशिश करने लगा, किन्तु स्विच मुझे ढूंढ़ने पर भी नहीं मिला। तब मैंने पिस्तौल के कुन्दे से सारे बल्ब फोड़ डाले और नीचे उतर आया। रामप्रसाद की यह बात 'गार्ड आप को पहचान रहा है', मेरे मन में चुभ गई। लोहे का सन्दूक बड़ी मुश्किल से अशफाक ने तोड़ा। डकैती शुरू होने के पहले तक हर तरफ से विरोध करने के बावजूद डकैती शुरू होने पर अशफाक ने पूरी तरह साथ दिया। इन कामों में करीब ३५ मिनट लग गए। जब चलने की तैयारी हुई तब मैंने रामप्रसाद से कहा- ''सूबेदार साहब, आप आगे बढ, सौ-सवा सौ गज जाकर रुक जाइयेगा। और सीटी बजाइयेगा मैं आ जाऊँगा। तब तक मैं उस गार्ड से निपट लूँ।'' सभी साथी चले गए। मैं अकेला गार्ड के पास खड़ा था। सामने ट्रेन खड़ी थी। सारा वातावरण शान्त और नि:स्तब्ध था। उस शान्त वातावरण में नि:स्तब्धता भंग कर मैंने शान्त स्वर में अंग्रेजी में कहा- ''(वैल गार्ड साहब) डैड मेन केन नॉट स्पीक'' ''मुर्दा आदमी बोल नहीं सकता।'' मैंने गार्ड से यह भी कहा- ''आपने मुझे बहुत देर तक बिजली की रोशनी में देखा और पहचाना है। इसलिये आपको क्यों न खत्म कर दूँ, ताकि पहचानने का झगड़ा ही मिट जाये।'' गार्ड साहब अपने सामने मौत का नजारा देख कर बहुत गिड़गिड़ाये और बोले- ''हुजूर मैं आपको कतई नहीं पहचानता हूँ, मुझे मत मारिये।'' मैंने कहा- ''सिर्फ एक कारतूस का खर्च है और सब संकट खत्म हो जायेगा।''

गार्ड साहब बहुत गिड़गिड़ाकर बोले– ''मैं आपको कैसे समझाऊँ कि मैं आपको कभी नहीं पहचानूँगा।''

मैंने पूछा– ''पुलिस के जोर देने पर भी नहीं?''

उन्होंने कहा– ''कभी भी नहीं।''

मैंने फिर पूछा– ''यह आपकी प्रतिज्ञा है?''

उन्होंने जोर देकर कहा– ''जी हुजूर, ये मेरी प्रतिज्ञा है और अटल प्रतिज्ञा है।'' मैंने कहा– ''ठीक है, ऐसी परिस्थिति में मैं आपकी जान बक्शने को तैयार हूँ, लेकिन क्या सबूत है कि आप इस प्रतिज्ञा को भंग नहीं करेंगे?'' गार्ड साहब बहुत जोर देकर बोले– ''हुजूर, कुछ भी हो जाये, मैं इस प्रतिज्ञा पर अटल रहूँगा कि आपको नहीं पहचानूँगा।'' मैंने कुछ सोचा और पूछा कि वह ईश्वर को मानते हैं कि नहीं। उनके हामी भरने पर और जी हाँ कहने पर मैंने कहा– ''इस वक्त मेरे और आपके बीच में जो बातचीत हुई है उसका साक्षी आपका ईश्वर है। आपने ईश्वर को साक्षी करके यह प्रतिज्ञा की है कि आप मुझे नहीं पहचानेंगे।'' इतने में साथियों की सीटी सुनाई दी। मैंने कहा– ''ऑल राईट गार्ड साहब, आपकी जान बक्श दी। मेरे जाने के बाद उठियेगा और आधा घण्टे के बाद गाड़ी को बढ़ाइयेगा।'' यह कह कर मैं चल दिया।

इस घटना के साल–छः महीने के बाद मैं बिहार प्रान्त के भागलपुर शहर में गिरफ्तार हुआ, इस बीच में मेरे बहुत से साथी गिरफ्तार हो गये थे। मेरा भी वारण्ट निकल चुका था और मैं फरार हो गया था। मुझे गिरफ्तार कराने वाले को कई हजार इनाम देने की घोषणा की जा चुकी थी। लखनऊ में काकोरी षड्यन्त्र का मुकदमा चल रहा था। जिसमें मुखबिरों के बयान से बहुत से भेद खुल चुके थे। इकबाली मुलजिम बनवारीलाल बता चुका था कि ट्रेन ड़कैती में सैकेण्ड क्लास में अशफाक, राजेन्द्र लाहिड़ी और मैं था।

बनवारीलाल भी ट्रैन डकैती के दस व्यक्तियों में था। बनवारीलाल के बयान से यह जाहिर हो चुका था कि सैकेण्ड क्लास से उतरने के बाद गार्ड से किया गया मेरा वार्तालाप उसने सुन लिया था। रेल में डॉक्टर चन्द्रपाल गुप्ता, जो हमारे डिब्बे में आ गया था, राजेन्द्र लाहिडी और अशफाक की शिनाख्त कर चुका था। एक मैं ही बाकी बचा था। गिरफ्तारी के बाद मैं भागलपुर से सैन्ट्रल जेल, लखनऊ लाया गया। लखनऊ में राजनैतिक कैदी के विशेष व्यवहार के अधिकार पर जेल वालों से मेरा झगड़ा हुआ और मैंने भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी। गिरफ्तारी के पहले फरारी हालत में बीमारी के कारण मैं काफी दुर्बल हो चुका था। इस अनशन ने मुझको और भी कमजोर बना दिया। अनशन के पाँचवे या छठे दिन मेरी शिनाख्त कराने की कार्यवाही की गई।

मजिस्ट्रेट को मालूम था कि मैं अनशन कर रहा हूँ। उन्होंने आकर मुझसे पूछा– ''शिनाख्त की कार्यवाही स्थगित की जाये?'' मुझको मजिस्ट्रेट से मालूम हुआ कि सवा सौ या डेढ़ सौ आदमी से शिनाख्त कराने में घण्टा–सवा घण्टा से ज्यादा नहीं लगेगा। मैंने अन्य सब परिस्थितियों का विचार कर मजिस्ट्रेट से कहा– ''तमाम स्टेशनों से इतने आदमी इकट्ठे होकर परेशान हो रहे हैं। मैं इनके लिये घण्टा–सवा घण्टा झेल लूँगा। शिनाख्त की कार्यवाही खत्म कर दीजिये।'' इस कार्यवाही के लिये जेल के एक अहाते में पाँच–छः कैदियों के साथ मुझको खड़ा किया गया। मैं लाईन में खड़ा मजिस्ट्रेट से हँसी–मजाक कर रहा था कि मुखबिर बनारसी आया और मुझे पहचान लिया। उसके पीछे इकबाली मुलजिम बनवारीलाल आया और उसने भी मुझे हंसते हुए पहचान लिया। तब मैं बहुत गम्भीर हो गया। दो–चार गवाह आये, लेकिन कोई भी मुझे नहीं पहचान सका। मुखबिर इन्द्रभूषण आया। उसने भी कई चक्कर काटे। सबके चेहरे बहुत गौर से अध्ययन करने के पश्चात् भी मुझको पहचान न सका। उसकी आँखों में देखकर मैंने महसूस किया वह सचमुच मुझे नहीं पहचान रहा है। मेरे जिस चेहरे से वह परिचित था, उसमें और वर्तमान में असमानता के कारण वह मुझे नहीं पहचान सका।

और कई गवाहों के गुजरने के बाद जगन्नाथ मेरे सामने आये। उनके आते ही मैंने उन्हें पहचान लिया। जब वह मेरे सामने से गुजरे तब उनकी आँखों में भी पहचानने की झलक सी देखी, लेकिन वह मुझे न पहचानने का अभिनय करते हुए आगे बढ़ गये। दो चक्कर लगाने के बाद उन्होंने मजिस्ट्रेट से कहा इसमें तो नहीं है। मजिस्ट्रेट ने फिर गौर करने को कहा। उसने दो चक्कर मेरे सामने लगाये। इस बार भी मैंने उसकी आँखों में पहचानने की झलक देखी। लेकिन उन्होंने मेरे बगल वाले व्यक्ति का हाथ पकड़ा, फिर गार्ड साहब भेज दिये गये। गार्ड जगन्नाथ प्रसाद के चले जाने के साथ–साथ मेरे मानस पटल पर चलचित्र की भाँति ९ अगस्त १९२५ की सारी घटनाएँ रह–रह कर उभरने लगी।

काकोरी सप्लीमेन्टरी षड्यन्त्र केस में अशफाक को फांसी दे दी गई और मुझको उम्र कैद की सजा मिली। जमाना गुजर गया। यू.पी. की सैन्ट्रल जेल में बहुत–सी लड़ाईयाँ लड़ने के बाद और बहुत सारी भूख हड़ताल करने के बाद मैं रिहा हुआ। मेरे साथी भी रिहा हुये। उस वक्त अपने प्रान्त में कांग्रेस की मिनिस्ट्री थी, जिसने हमें

रिहा किया। मैं कांग्रेस में शामिल हुआ और धीरे-धीरे यू.पी. सूबा कांग्रेस कमेटी, लखनऊ ऑफिस सैक्रेट्री हो गया। सन् १९३९ की बात है, मैं प्रान्तीय कांग्रेस के सभापति पं. जवाहरलाल नेहरू के कहने से रायबरेली के कांग्रेसियों के आपसी झगड़े को तय कराने वहाँ गया हुआ था और वहाँ के सब झगड़ों की जाँच करके लखनऊ लौटने के लिये रायबरेली स्टेशन के प्लेटफार्म पर पंजाब मेल का इन्तजार करते हुए एक बेंच पर बैठकर अखबार पढ़ रहा था। इतने में एक रेलवे अफसर मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। उसके सफेद सूट को मैं देख रहा था। मेरा नाम पुकार कर नमस्ते करने पर जब मैंने सिर उठाया तब देखा कि वही चिरपरिचित जगन्नाथ प्रसाद खड़े हैं। १४ वर्ष बीत जाने के बाद भी मैंने उन्हें पहचान लिया। उनकी मूंछें और बढ़ गई थीं तथा उनमें कुछ सफेदी भी आ गई थी। मैंने हँसकर कहा- ''हैलो गार्ड साहब, आप मुझे भूले नहीं हैं?'' गार्ड जगन्नाथ प्रसाद ने उसी पुराने लहजे में उत्तर दिया- ''नहीं हुजूर, इस जिन्दगी में मैं आपको कभी भूल नहीं सकता।''

**- द्वारा आनन्द देव शास्त्री, झज्जर**

## नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

**कैलेण्डर - ( क ) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ-** इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

**( ख ) सन्ध्या सुरभि-** इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

**( ग ) गायत्री मन्त्र-** इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

**स्टीकर-** इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषत: प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

## आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

**लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।**

**अवधि:** - २४-०५-२०१४ त: ३१-०५-२०१४ (अष्ट दिनात्मकम्)
(२३-०५-२०१४ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

**स्थानम्** - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्ग:, अजमेर-३०५००१, दूरभाष:- ०१४५-२६२१२७०

**योग्यता** - संस्कृते रुचिमन्त: संस्कृत-आचार्या:, अध्यापका:, संस्कृतछात्रा:, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

**शुल्कम्** - ३०० रुप्यकाणि।

**व्यवस्था** - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिन: नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्री: च आनयेयु:।

**स्वरूपम्-** शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यास:,

**विशेष** - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

**डॉ. धर्मवीर:**
अध्यक्ष:

**डॉ. निरञ्जन साहु:**
सचिव:
०९४१४७०९४९४, ९८२९१७६४६०

# सम्बन्धों की सार्थकता

**- सुकामा आर्या**

बचपन से लेकर आज तक हम सम्बन्धों के सहारे ही जीते आए हैं। सम्बन्ध कई प्रकार के होते हैं। माँ से, पिता से, भाई-बहन से, मित्रों से, सगे-सम्बन्धियों से सम्बन्ध हमारे जीवन को चलाते हैं। ईश्वर ने इतनी अच्छी व्यवस्था कर रखी है कि समयानुसार परिस्थितियों के अनुसार हमारे सम्बन्ध बदलते रहते हैं या यूँ कहेंकि इनका स्वरूप बदल जाता है। बचपन में जिस माँ के बिना सम्भव सा नहीं लगता- थोड़ा सम्भलते ही उसकी आवश्यकता कम होने लगती है। यौवन आते-आते वह लगभग समाप्त ही हो जाती हैं। फिर नए सम्बन्ध बनते हैं- मित्रों के, सहपाठियों के, अध्यापकों के और अपरिचितों के।

हम यथासम्भव पूरी शिद्दत से जिस सम्बन्ध को आज निभा रहे हैं, समय बीतने पर उसको, (कालान्तर में) उतनी शिद्दत से नहीं निभा पाते, परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। जैसे- विवाहोपरान्त व्यक्ति के जीवन में माँ-बाप, भाई-बहन के साथ-साथ पत्नी, बच्चों का दायित्व भी आ जाता है। उसे दोनों में सामञ्जस्य बनाना होता है। अगर व्यक्ति विवाहोपरान्त भी उसी प्रकार माँ-बाप, भाई-बहनों से, मित्रों से घनिष्ठता रखे, बच्चों व पत्नी की उपेक्षा करे तो यह न्याय संगत नहीं होता है। जो व्यक्ति समय के साथ, परिस्थितियों के अनुसार बदलते नहीं हैं वे जीवन की दौड़ हार जाते हैं। सीधे तने वृक्ष आंधी तूफान में उखड़ जाते हैं- जो तेज आंधी की दिशा में झुक जाते हैं वे अपने में सफल माने जाते हैं।

अगर उबलते हुए पानी पर ढ़ीला ढ़क्कन रख कर भले ही जोर से दबा देवें, भाप विभिन्न दिशाओं से बाहर निकल ही जाएगी। दबाव से किसी परिस्थिति को हम केवल कुछ समय के लिए ही रोक सकते हैं, हमेशा के लिए नहीं। सम्बन्ध बनाए रखने के लिए संवाद व संवेदनशीलता दोनों बहुत जरूरी हैं। बुर्जुग कहते हैं- ''दिल मिले न मिले, हाथ मिलाते रहिए।'' यानी बातचीत करनी नहीं छोड़नी चाहिए या यूँ कहें कि अभिव्यक्ति नहीं छोड़नी चाहिए। क्योंकि अगर संवाद हट गया तो यकीनन वहाँ विवाद आ जाएगा, जो कि हम किसी भी सम्बन्ध में नहीं चाहते हैं।

दूसरा पहलू है- संवेदनशीलता। हम अपने प्रति, अपने आसपास के लोगों के प्रति कितने संवेदनशील हैं? कितने सम्बन्धित महसूस करते हैं? यह मधुर व लम्बे समय तक सम्बन्ध बनाए रखने में सहयोगी होते हैं। यह बात इसी तरह पुष्ट होती है, जब कहा जाता है कि-

**भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तूने रोटी खाई तो क्या?**
**दुखिया पास पड़ा है तेरे, तूने मौज उड़ाई तो क्या?**

आज के वातावरण में हम मानसिक स्तर पर संकुचित होते जा रहे हैं। मैं और मेरा परिवार एक तरफ, बाकी सारी दुनिया दूसरी तरफ। हमने सब तरफ से दूरियाँ बना ली हैं। यह दूरियाँ मानसिक के साथ-साथ भावनात्मक एवं वैचारिक स्तर पर भी हो गई हैं। यूँ तो हम आधुनिक टैक्नोलोजी से चाँद तक पहुँच गए हैं, पर हम स्वयं से, अपने परिजनों से, मित्रों से दूर होते जा रहे हैं।

**तुम उठो, उठकर गिरा दो बीच की दीवार को।**
**देखना आंगन तुम्हारा, दोगुना हो जाएगा।।**

एक हम सबका विशेष सम्बन्ध होता है- ईश्वर के साथ। ध्यान रखें- भले ही बाकी सब सम्बन्धों में कुछ शिथिलता आ जाए, परन्तु ईश्वर के साथ सम्बन्ध अटूट, सतत बना रहना चाहिए। क्योंकि- ''प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है, उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है।'' यूँ भी यही एक रिश्ता है जो आन्तरिक है। हमेशा के लिए है। प्रत्यक्ष रूप से देखें तो ये एक तरफा सम्बन्ध प्रतीत होता है परन्तु यह इतना खूबसूरत रिश्ता है, जो शत-प्रतिशत दो तरफा है। गुरुजन, मित्रजन तो कई बार हमारे तोहफे को लेने से इन्कार कर सकते हैं, क्योंकि वही तो हम देंगे जो हमारे पास है। और उनकी अपनी मान्यताएँ, आवश्यकताएँ हैं, जिनसे हम अनभिज्ञ होते हैं। परन्तु ईश्वर को हम जो भी देते हैं- अपना प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, समपर्ण, समय, सेवा वह पूर्णतया प्रेम से स्वीकार करता है और बदले में अपनी दया, कृपा, शान्ति, सुख व आनन्द देता है।

हमें इस सदा रहने वाले सम्बन्ध को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए। 'एक के साधे सब सधे' ये बात यहाँ चरितार्थ होती है। जब किसी देश के राष्ट्रपति का दूसरे देश के राष्ट्रपति से समझौता हो जाता है तो जनता का तो अपने आप ही हो जाता है। जब जड़ को पानी दे दिया तो पत्ते-पत्ते और डाली-डाली को अलग से देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। १०० रुपये में दस रुपये का अन्तर्भाव हो ही जाता है। इसलिए हमें इस सर्वोत्तम, सर्वोच्च रिश्ते की जड़ों को मजबूत करना चाहिए, उसके लिए अपनी उपासना में, ध्यान में सर्तकता, नियमितता आवश्यक

है। सारी दुनिया के लोगों को हम दिन के १६ घण्टे देते हैं, तो ईश्वर के लिए कम से कम २ घण्टे तो अवश्य देवें। हम जितना समय ज्यादा देते हैं, उतनी घनिष्ठता बढ़ती ही है। स्वयमेव सुधरेंगे, नहीं भी सुधरेंगे तो उनसे उपेक्षा भाव हो जाएगा। बस इस मुख्य, अभिधा सम्बन्ध के लिए तड़प होनी चाहिए कि-

**कभी ए हकीकत-ए मुतजिर नजर आ मिजाज-ए-लिबास में,**
**कि हजारों सजदे तड़प रहे हैं तेरे इस जबीन-ए-नियाज में।**

जीवन में जो भी सम्बन्ध बनाएँ उन्हें गम्भीरता से लें और दूर तक निभाएँ। समय व सीमा की दूरी सम्बन्धों में न आने दें।

ईश्वर के साथ सम्बन्ध अत्यन्त निकटता का है और सदा के लिए है। इसमें वरदान यह है कि हम ईश्वर से किसी भी रूप में सम्बन्ध बना सकते हैं- माँ के रूप में, पिता के रूप में, गुरु के रूप में, बन्धु के रूप में। हम अपनी सारी भावनाओं को उसे समर्पित कर सकते हैं। दुनिया के सम्बन्ध, रिश्ते तो एक बड़ी-सी कोष्ठक में, ब्रेकेट में बन्धे हुए मिलते हैं, पर यह रिश्ता बन्धन-रहित है, बन्धनों से मुक्त करवाने वाला है, असीम है, अनन्त है।

**ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

## न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

**ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में स्वामी विष्वङ्** द्वारा (वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७१, १ मई २०१४) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में मार्च-अप्रैल २०१५ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में प्रात: व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

# अतिथि यज्ञ के होता बनें

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।**

**सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।**

***प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ***– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।***

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

## अतिथि यज्ञ के होता

## ( १ से १५ फरवरी २०१४ तक )

१. श्री चौ. देवसीराम आर्य, हरियाणा २. श्री देव मुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पलवल, हरियाणा ५. श्री लक्ष्मण जिज्ञासु, गाजियाबाद ६. श्रीमती उषा माता, अजमेर ७. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ८. श्री नाथूलाल त्रिवेदी, भीलवाड़ा, राज. ९. श्रीमती रामप्यारी देवी, भीलवाड़ा, राज. १०. श्री वागीश गुप्ता, दिल्ली ११. श्रीमती अदिति गुप्ता, दिल्ली १२. श्री भीम पात्र, अजमेर १३. श्रीमती सावित्री देवी, करनाल, हरियाणा १४. श्री जेठमल कालूराम हुफ, ब्यावर, राज. १५. श्रीमती प्रतिभा, हिसार, हरियाणा १६. श्री ओमप्रकाश लड्ढा, अजमेर १७. श्री विरेन्द्र प्रसाद, अजमेर १८. श्री योगेश और कुञ्जलता, अजमेर १९. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र २०. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली।

**-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

## ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

## ( १ से १४ फरवरी २०१४ तक )

१. श्री देव मुनि, अजमेर २. श्रीमती उषा माता, अजमेर ३. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ४. श्री राजेश कुमार, नई दिल्ली ५. श्रीमती आशा माहेश्वरी, अजमेर ६. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ७. श्री अदिति गुप्ता, दिल्ली ८. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकूला, हरियाणा ९. श्री मयंक कुमार, अजमेर १०. श्री सुरेन्द्र, अजमेर ११. श्री रमेश, अजमेर १२. श्रीमती निर्मला देवी, अजमेर १३. श्री प्रधान, आर्यसमाज विजयनगर, राज. १४. श्रीमती सुभद्रा शर्मा, विजयनगर १५. श्री गौरव माथुर, जयपुर १६. श्री राकेश लोहिया, जयपुर १७. श्री जितेन्द्र गर्ग, जयपुर १८. श्री निशान्त शर्मा, जयपुर १९. श्री राजेन्द्र शर्मा, जयपुर २०. श्री रामकिशोर शर्मा, जयपुर २१. श्री चन्दभाई, बैंगलूर, कर्नाटक २२. श्री गोपाल गोयल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. २३. डॉ. के.एम. श्रीवास्तव, दिल्ली।

**-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ित सहायतार्थ दान

## ( ५ जुलाई से २ नवम्बर २०१३ तक )

१. रमा टेक्सटाईल मिल्स, किशनगढ़, राज. २. डॉ. अर्जुनदेव तनेजा, नई दिल्ली ३. आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, म.प्र. ४. डॉ. सत्यदेव सिंह ५. श्रीमती चन्द्रप्रभा, अजमेर ६. श्री जेठाराम सोलंकी, जोधपुर, राज. ७. श्री करतारसिंह बत्रा, जोधपुर, राज. ८. श्री विजयसिंह भाटी, जोधपुर, राज. ९. श्री धनपत राय, आसाम १०. श्री वरुण आर्य, बैंगलूर, कर्नाटक ११. श्री रामस्वरूप आर्य, अलवर, राज. १२. श्रीमती अनिता गर्ग, अजमेर १३. श्री निरंजन साहू, अजमेर १४. आर्य युवा मंच, नेपियर टाउन, जबलपुर १५. श्री विश्वास पारीक, अजमेर १६. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर १७. श्री मोक्ष और ममता मेहतानी, गुड़गाँव १८. आर्यसमाज सुशान्त लोक, गुड़गाँव १९. आयुषी आर्या,

अजमेर २०. श्री दुर्गाशंकर गुप्ता, अजमेर २१. राजपूताना हाउस, अजमेर २२. श्री देवमुनि, अजमेर २३. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर २४. श्री राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब २५. डॉ. शशि मिगलानी, अबोहर, पंजाब २६. वानप्रस्थ साधक आश्रम, साबरकांठा, गुजरात २७. श्रीमती कमलारानी हरचन्दानी, सरदार शहर, राजस्थान २८. श्री राजेन्द्र प्रसाद जोशी, अजमेर २९. श्री विजय कुमार झां, जयपुर केन्ट ३०. डॉ. बलवन्तसिंह, बीकानेर ३१. श्री गोवर्धनलाल झँवर, म.प्र. ३२. श्री यशपाल गुप्ता, दिल्ली ३३. श्री रूपनारायण शर्मा, सीकर, राजस्थान ३४. श्री जगराम आर्य, महेन्द्रनगर, हरियाणा ३५. श्री सुरेशचन्द गर्ग, गंगापुरसिटी, राजस्थान ३६. आर्यसमाज नई आबादी, छिन्दवाड़ा, म.प्र. ३७. श्री मंगल, अजमेर ३८. डॉ. वी.के. जैन, अजमेर ३९. श्री विजय बंसल, अजमेर ४०. डॉ. सी.एच. कौशिक, अजमेर ४१. श्री मनोज विश्नोई, अजमेर ४२. श्री के.के. शर्मा, अजमेर ४३. श्री महेश सोनी, अजमेर ४४. डॉ. प्रकाश पंकज, अजमेर ४५. प्रो. बी.पी. सारस्वत, अजमेर ४६. डॉ. आशीष पारीक, अजमेर ४७. डॉ. आशीष भटनागर, अजमेर ४८. कॉम्पिटीशन प्लस संस्थान, अजमेर ४९. आर्यसमाज पिचौली, उदयपुर ५०. श्री सोमदेव आर्य, जोधपुर ५१. श्री चेनाराम बर्फा, जोधपुर ५२. श्रीमती माता कौशल्या, अजमेर ५३. श्री महेन्द्र कुमार, अम्बेड़कर नगर, उ.प्र. ५४. महिला आर्यसमाज भोजपुर, उ.प्र. ५५. श्री तीर्थराम शर्मा, कांगड़ा, हि.प्र. ५६. श्री अमरसिंह आर्य, जयपुर, राजस्थान ५७. श्री आदित्य प्रकाश,सहारनपुर, उ.प्र. ५८. श्री सुरेशचन्द शर्मा, अजमेर ५९. माता उर्मिला राजोत्या, अजमेर ६०. हरिप्रिया, जहीराबाद, आ.प्र. ६१. श्री हरिनारायण गौरीशंकर, सिहोर, म.प्र. ६२. आर्यसमाज राजाजीपुरम्, लखनऊ, उ.प्र. ६३. श्रीमती सावित्री सक्सेना, गोंड़ा, उ.प्र. ६४. श्री ओम शंकर, शाजाहापुर, उ.प्र. ६५. श्री लक्ष्मीनारायण आर्य, जोधपुर, राजस्थान ६६. डी.ए.वी. सी.सै. स्कूल, अजमेर ६७. श्री विनोदचन्द, हैदराबाद, आ.प्र. ६८. श्री विजय बहादुर पटेल, इलाहाबाद ६९. आर्यसमाज छिपा बड़ौद, बारन, राजस्थान ७०. श्री सूरजमल गोयल, बारन, राजस्थान ७१. श्रीमती उषा कुन्तल, भरतपुर, राजस्थान ७२. श्री शिवाजी, मान्द्रा, महाराष्ट्र।

**-परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई-मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

## वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

## आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छः-छः मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

# आह! डॉ. विमलेश नहीं रहे

– राजेन्द्र जिज्ञासु

श्रद्धेय पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के पौत्र डॉ. विमलेश जी चल बसे। आपके पिता श्री विश्वप्रकाश जी भी एक यशस्वी आर्य पत्रकार, साहित्यकार तथा कर्मठ आर्यसमाज सेवी थे। मेरा डॉ. विमलेश जी से बहुत पुराना सम्बन्ध था। आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न शिक्षा शास्त्री तथा सुदक्ष साहित्यकार थे। उपाध्याय जी के साहित्य सृजन में आपका भी बहुत सहयोग रहा। फिलॉसफी ऑफ दयानन्द ग्रन्थ रत्न लिखने का विचार उपाध्याय जी ने आयु के वार्धिक्य के कारण तज दिया था। इस आशय का पत्र किसी भक्त को लिखा रहे थे। विमलेश जी ने पत्र लिखने से इनकार कर दिया। आपने कहा, ''आप बोल दिया करें, मैं लिखता जाऊँगा। क्या हम आपकी इतनी सेवा नहीं कर सकते?'' यह घटना उपाध्याय जी ने अपने एक उर्दू लेख में की थी। यह चर्चा कभी मैंने छेड़ी तो विमलेश जी ने कहा, ''भला मैं ऐसा पत्र क्यों लिखता? लोग क्या सोचते कि इनके पुत्र, पौत्र इनको इतना भी सहयोग नहीं करते?'' दूसरी बात यह कही कि आप तो हमारे घर की सब बातें जानते हैं।

इस ग्रन्थ के प्राक्कथन में पूज्य उपाध्याय जी ने डॉ. विमलेश को भी बहुत धन्यवाद दिया है। सच तो यही है कि यह ग्रन्थ डॉ. विमलेश जी की कृपा से ही जन्म ले सका। आप कॉलेज में पढ़ते समय पितामह के पत्र भी लिखते रहे। मेरे पास अब भी उनके हाथ से लिखे गुरु जी के कई पत्र होंगे। डॉ. विमलेश जी ने स्वामी सत्यप्रकाश जी को भी उनके वेद तथा उपनिषद् विषय के अंग्रेजी साहित्य में अपूर्व सहयोग दिया। बहुत मेधावी विद्वान् होने पर भी मेरे बार-बार प्रेरणा देने पर कुछ नहीं लिखकर दिया। शरीर की स्थूलता भी इसका एक कारण हो सकती है। उनके सीने में अथाह ज्ञान था, सब साथ ही ले गये। मैं कहता ही रहा, संस्मरण भी लिखकर नहीं दिये।

जब कभी कुछ पूछा बहुत उदारता से और स्नेह से सब कुछ बताते थे। अभी गत जनवरी में डॉ. विद्याभूषण जी 'विभु' के काव्य संग्रह की दो पाण्डुलिपियाँ मुझे सौंप दीं। एक और कार्य का भार मुझ पर डाल गये जो पूरा करने का पूरा प्रयास किया जावेगा। उनकी दो बातें मैं कभी नहीं भूल सकता। भरी सभा में बोले, दादा ने एक सप्ताह में दादी की जीवनी लिख दी। केवल सात सौ प्रतियाँ छपी थीं। हमारे घर में भी अब नहीं। आपने इसे सुरक्षित रखा और फिर छपवा दी। यह भी कहा कि आपने ठीक ही लिखा है कि दादा को महान् बनाने में हमारी दादी का विशेष योगदान है।

दादा-दादी पर कुछ लिखकर देने को कहा तो हाथ जोड़कर सबके सामने बोले, ''दादा-दादी के बारे में आपसे अधिक कोई नहीं जानता।'' यह घटना अहंकार पूजा के लिये मैंने यहाँ नहीं दी। यह घटना डॉ. विमलेश जी के स्नेह, सौजन्य तथा विनम्रता को दर्शाने के लिए दी है। उन्होंने समय पूर्व कॉलेज का प्राचार्य पद त्याग दिया। उनके निधन से हमने एक रत्न खो दिया। कितनी क्षति हुई है इसे इनको जानने वाले ही जानते हैं।

**वेद सदन, अबोहर-१५२११६ (पंजाब)**

## ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

**-व्यवस्थापक**

# वेदों की बातें

– रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

१. **अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः।** (अथर्व. ५.३.५)
हम शरीर से निरोग हों और उत्तम वीर बनें।

२. **अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम्।** (अथर्व. ६.७८.२)
मनुष्य दुग्धादि पदार्थों से बढ़े और राज्य से बढ़े।

३. **अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।** (अथर्व. १०.२.३१)
आठ चक्रों और नौ द्वारों से युक्त हमारी यह देहपुरी एक अपराजेय देवनगरी है।

४. **सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम।** (अथर्व. ६.११७.३)
हम लोग ऋणरहित होकर परलोक के सभी मार्गों पर चलें।

५. **वाचा वदामि मधुमद्।** (अथर्व. १.३४.३)
वाणी से माधुर्ययुक्त ही बोलता हूँ।

६. **ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।** (अथर्व. १.३१.४)
हम सूर्य को बहुत काल तक देखते रहें।

७. **मा पुरा जरसो मृथाः।** (अथर्व. ५.३०.१७)
हे मनुष्य! तू बुढ़ापे से पहले मत मर।

८. **पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।** (ऋग्. १०.११७.५)
मनुष्य अपने सम्मुख जीवन का दीर्घ पथ देखें और याचना करने वाले को दान देकर सुखी करे।

९. **शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम्।** (अथर्व. ६.७१.३)
मेरे लिए अन्न कल्याणकारी और स्वादिष्ट हो।

१०. **शिवा नः सन्तु वार्षिकी।** (अथर्व. १.६.४)
हमें वर्षा द्वारा प्राप्त जल सुख दे।

११. **विश्वकर्मन् नमस्ते पाह्यस्मान्।** (अथर्व. २.३५.४)
हे विश्वकर्मन्! तुमको नमस्कार है। तुम हमारी रक्षा करो।

१२. **निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक्।** (अथर्व. १६.२.१)
हमारी शक्तिशालिनी मीठी वाणी कभी भी दुष्ट स्वभाव वाली न हो।

१३. **शतं जीवेम शरदः सर्ववीराः।** (अथर्व. ३.१२.६)
हम स्वभिलषित पुत्र-पौत्रादि से परिपूर्ण होकर सौ वर्ष तक जीवित रहें।

१४. **धेनु सदनं रयीणाम्।** (अथर्व. १.१.३४)
गौ सम्पत्ति का घर है।

१५. **उप सर्प मातरं भूमिम्।** (ऋग्. १०.१८.१०)
मातृभूमि की सेवा करो।

१६. **नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्या।** (यजु. ९.२२)
मातृभूमि को नमस्कार है, मातृभूमि को नमस्कार है।

१७. **वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।।** (यजु. ९.२३)
हम अपने राष्ट्र में सावधान होकर नेता बनें।

१८. **सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः।।** (अथर्व. १२.१.१०)
मातृभूमि, मुझ पुत्र के लिए दूध आदि पुष्टिकारक पदार्थ प्रदान करे।

१९. **माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।** (अथर्व. १२.१.१२)
भूमि (स्वदेश) मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

२०. **भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रष्ठितम्।** (अथर्व. १२.१.६३)
हे मातृभूमि तू मुझे अच्छी तरह प्रतिष्ठित करके रख।

२१. **यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।** (यजु. ३६.२२)
जहाँ-जहाँ से आवश्यक हो, वहाँ-वहाँ से हमें अभय प्रदान करो।

२२. **स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः।** (सामवेद २१.३.९)
विस्तृत यश वाले इन्द्र हमारा कल्याण करें, सर्वज्ञ पूषा हम सबके लिए कल्याणकारक हों।

२३. **जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।** (अथर्व. १.३४.२)
मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य हो। मेरी जिह्वा के मूल में मधुरता हो।

२४. **प्राणो ह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आ दधत्।** (अथर्व. ११.४.११)
प्राण सत्य बोलने वाले को श्रेष्ठ लोक में प्रतिष्ठित करता है।

२५. **सुश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम्।** (अथर्व. १६.२.४)
शुभ और शिव वचन सुनने वाले कानों से युक्त मैं केवल कल्याणकारी वचनों को ही सुनूँ।

२६. **भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्।** (ऋग्. १०.२५.१)
हे परमेश्वर! हमें कल्याणकारक मन, कल्याण करने का सामर्थ्य और कल्याणकारक कार्य करने की प्रेरणा दें।

२७. **शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो**

**अस्तु।** (ऋग्. ७.३५.५)
द्युलोक और पृथिवी हमारे लिए सुखकारक हों, अन्तरिक्ष हमारी दृष्टि के लिए कल्याणप्रद हो।

२८. **सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।** (ऋग्. १०.३७.२)
वह सत्य-कथन सब ओर से मेरी रक्षा करे, जिसके द्वारा दिन और रात्रि का सभी दिशाओं में विस्तार होता है।

२९. **सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।** (ऋग्.७.१०४.१२)
उत्तम ज्ञान के अनुसन्धान की इच्छा करने वाले व्यक्ति के सामने सत्य और असत्य दोनों प्रकार के वचन परस्पर स्पर्धा करते हुए उपस्थित होते हैं।

३०. **मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा।** (ऋग्.७.३२.१३)
यज्ञ भावना से भावित सदाचारी को भली प्रकार से विवेचित् सुन्दर आकृति से युक्त, उच्च विचार दो।

३१. **जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य अ विदथे वर्धमानः।** (ऋग्. ३.८.५)
जिस व्यक्ति ने जन्म लिया है, वह जीवन को सुन्दर बनाने के लिए उत्पन्न हुआ है।

३२. **स हि सत्यो यं पूर्वे चिद् देवासश्चिद्यमीधिरे।** (ऋग्.५.२५.२)
सत्य वही है जो उज्ज्वल है, वाणी को प्रसन्न करता है।

३३. **जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवमुत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति।** (ऋग्. ३.७.५)
जिनकी वाणी महिमा के कारण मान्य और प्रशंसनीय है, वे ही सुख की वृष्टि करने वाले अहिंसा के धन को जानते हैं।

३४. **सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।** (अथर्व. ३.३०.१)
परस्पर हृदय खोलकर एकमना होकर कर्मशील बने रहो।

३५. **उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूताः।** (अथर्व.१२.१.६२)
हे मातृभूमि! तेरी सेवा करने वाले हम निरोग और आरोग्यपूर्ण हों।

३६. **जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।।** (अथर्व. ३.३०.२)
पत्नी पति से मधुर और सुखद वाणी बोले।

३७. **इमा या गावः स जनास इन्द्र.।।** (अथर्व. ४.२१.५)
जिसके पास गौएं रहती हैं, वह तो एक प्रकार से इन्द्र ही है।

३८. **नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा।** (अथर्व. ११.२.१६)
उस को सायंकाल नमस्कार हो, प्रातःकाल नमस्कार हो, रात्रि में नमस्कार हो एवं दिवस में नमस्कार हो।

३९. **ओ३म् क्रतो स्मर।** (यजु. ४.१५)
हे कर्म करने वाले प्राणी! तू उस प्रभु का स्मरण कर।

४०. **स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो: जगते पुरुषेभ्यः।** (अथर्व. १.३१.४)
माता, पिता, गौएं, पुरुष तथा चलने वाले प्राणियों को सुख प्राप्त हो।

४१. **स्वं महिमानमायजताम्।** (यजु. २१.४७)
अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाओ।

४२. **अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।** (यजु. ४०.१४)
मानव अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के (जीत कर) विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है।

४३. **निन्दितारो निन्दयासो भवन्तु।** (ऋग्. ५.२.६)
निन्दक स्वयं निन्दित हों।

४४. **आकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु।** (अथर्व. ५.३.४)
मेरे मन का संकल्प सच्चा हो।

४५. **अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्याः।** (यजु. २.१०)
हमारे आशीर्वाद सच्चे हों।

४६. **सूर्यस्यवृत्तमन्वावर्ते।** (यजु. २.२७)
मैं सूर्य-सा तेजस्वी और गतिशील बनूँ।

४७. **यशः श्रीः श्रयतां मयि।** (यजु. ३९.४)
मुझ में यश तथा शोभा सदा विद्यमान रहे।

४८. **बालदेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते।** (अथर्व. १०.८.२५)
वह जीवात्मा बाल से भी कहीं अधिक सूक्ष्म है, अतः वह इन स्थूल भौतिक साधनों से दिखाई नहीं देती।

**- सिहाल, कांगड़ा-१७६०५३ (हि.प्र.)**

---

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९**

# ज्ञान, ज्योति और चारित्र्य के दीपक बनो

– आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य

**अपने समय के विश्रुत विद्वान्, शान्तिनिकेतन के आचार्य महामहोपाध्याय विधुशेखर भट्टाचार्य ने १९३२ गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के नवस्नातकों को संस्कृत में दीक्षान्त भाषण दिया था। उसका सारानुवाद स्व. प्रेमचन्द जी द्वारा सम्पादित 'हंस की फाइल' से यहाँ उद्धृत है। –सम्पादक**

ज्ञान और कर्म दोनों साथ-साथ रहकर समृद्धि की ओर ले जाते हैं। एक दूसरे के बिना नहीं। वह ज्ञान किस काम का जिसका अनुयायी कर्म नहीं अथवा वह कर्म ही किस काम का जो ज्ञान का अनुगमन नहीं करता। लोक में जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, वह कुछ कम नहीं होता। इस ज्ञान का यदि लेशमात्र भी आचरण किया जाये, तो वह अवश्य ही बहुत श्रेयस्कर होता है।

ज्ञान और आचरण भिन्न-भिन्न हैं। इस महान अनर्थ की आजकल के विश्वविद्यालयों में उपेक्षा की जाती है। वहाँ के अधिकारी ज्ञानमात्र देकर-समझ लेते हैं कि सारा करणीय कार्य समाप्त हो गया और यही मानकर वे तृप्त हो जाते हैं। विद्यार्थी भी उतना ही लेकर सन्तोष कर लेते हैं और समझते हैं कि सारा प्राप्तव्य वे पा गये। इस ज्ञान के आधार की कुछ भी परवाह न तो अधिकारियों को है और न विद्यार्थियों को। अधिक तो क्या, इसके विचारने की कोई जरूरत भी है, यह बात उनके चित्त में नहीं आती।

यही गुरुकुल और अन्य विद्यालयों-खासकर विश्वविद्यालय में भारी भेद है। गुरुकुल में उपनीत विद्यार्थी को आचार्य प्रथम ही आचार सिखाते हैं, पर यह शिक्षा ज्ञानपूर्वक होती है। जैसा-जैसा वह सीखता है, वैसा-वैसा वह आचरण भी करता है। आचार्य और अन्य गुरुकुलवासियों को उसी तरह का आचरण करते देखकर ब्रह्मचारी भी वैसा ही आचरण करता जाता है। इस आचरण से ब्रह्मचारी वह सामर्थ्य पाता है, जिससे वह अपने भावी, अतिदुष्कर गृहस्थ-व्रत को अनायास पालन कर सकता है।

ऋषिगण कहते हैं– और ठीक कहते हैं– कि तुमने जन्मकाल से ही चार प्रकार के ऋण ग्रहण कर रखे हैं। तुम पर कुछ उधार देवताओं का है, कुछ ऋषियों का, कुछ पितरों का और कुछ मनुष्यों का। शान्त मन से विचारों कि इसका क्या अभिप्राय है। तुम्हें उन ऋणों से अपना छुटकारा करना होगा। तुम्हें स्वार्थ भावना छोड़कर यज्ञों का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिये। देवताओं के लिये उत्सर्ग करना चाहिये। तुम्हें ज्ञान का उपार्जन अवश्य करना चाहिये, तुम्हें उस विद्या-प्रवाह की रक्षा अवश्य करनी चाहिये, जो परम्परा-क्रम से उन ऋषियों से प्राप्त हुई हैं, जिन्होंने सहस्रों वर्ष इसके लिये तप किये। तुम्हें गृहस्थ धर्म का अवश्य पालन करना चाहिये और इस धर्म का पालन करके उत्तम कोटि की सन्तान उत्पन्न करनी चाहिये। सन्तान ऐसी होनी चाहिये, जिससे सारे भुवन का कल्याण हो। इस प्रकार प्रथम तीन ऋणों का शोधन होता है।

चौथा ऋण मनुष्यों का है। इसमें भी बहुत कुछ करना है। अधिक करना असम्भव हो तो कम से कम ये दो काम तो अवश्य करना चाहिये– उन्हें रहने की जगह और अन्न देना चाहिये। ये दो चीजें प्राणधारियों के प्रथम प्रयोजन की हैं। कभी भी, किसी भी तरह, वे अन्न और स्थान से वंचित न होने पावें। हाय, आजकल वे यह भी तो नहीं पा रहे हैं!

हम सभी स्रष्टा हैं। कोई छोटा है, कोई बड़ा। यही भेद है। कर्म से ही कोई प्रतिदिन सृष्टि करता है। इस सृष्टि से वह अपने को प्रकाशित करता है। सूर्य ताप देकर, अन्धकार दूर कर, संसार को प्रकाशित कर प्रतिदिन कुछ सृष्टि करता रहता है। ऐसा करने से वह खुद अपने आपको प्रकाशित करता है। यदि सूर्य का कर्म बन्द हो जाये, तो वह 'सविता' कहाँ रहा? कर्म से ही उसका प्रकाश है।

यह सृष्टि दो प्रकार की है– दैवी और आसुरी। दैवी सृष्टि संपद की ओर ले जाती है और आसुरी विपद की ओर। आसुरी सृष्टि का करना सहज है। वह क्षण भर में प्रलय भी कर सकती है। दैवी सृष्टि दुष्कर है, या अति दुष्कर है। तप बिना दैवी सृष्टि नहीं होती। बिना तप के सृष्टि की बात उपनिषदों में कहीं भी नहीं दिखायी पड़ती। तप करना सरल नहीं है।

सृष्टि के दो प्रकार होने से स्रष्टा भी दो प्रकार के होते हैं– प्रेयस्काम और श्रेयस्काम। प्रेयस्काम स्रष्टा प्रीति-मात्र की इच्छा रखता हुआ, अपनी सृष्टि से संसार के श्रेय (कल्याण) की इच्छा रखता है। आयुष्मानों, गम्भीरभाव से अपने चित्त में इसका विचार करो और सृष्टि में प्रवृत्त होओ। तुम सभी आत्मदीप और आत्मशरण होकर आगे-आगे बढ़ो।

कुछ लोग 'तमस्तमः परायण' होते हैं, वे तम से तम को जाते हैं। दूसरे 'तमोज्योतिः परायण' होते हैं, वे तम से ज्योति को जाते हैं। एक दूसरी तरह के वे लोग होते हैं जो 'ज्योतिस्तमः परायण' होते हैं, वे ज्योति से तम को जाते हैं। एक और तरह के वे लोग हैं जो 'ज्योतिर्ज्योतिः परायण' होते हैं, वे ज्योति से ज्योति को जाते हैं। हे आयुष्मानो, तुम सब 'ज्योतिर्ज्योतिः परायण' बनो।

तुम्हारा कल्याण हो, तुम्हारी विद्या तेजस्वी हो।

**– संस्कृत से सारानुवादः स्व. शंकरदेव विद्यालंकार**

# स्वप्रेरित प्रेरणास्पद विचार

**- अनुपमा शर्मा**

जीवन में ध्येय की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को होती है और यदि वह ध्येय दूसरे व्यक्तियों के जीवन में ज्ञान प्रकाश फैलाने में सहयोगी हो सके तो उससे उत्तम क्या होगा। अब तक गृहिणी के रूप में परिवार को व्यवस्थित व बच्चों के भविष्य को अच्छी दिशा दिखा कर, यह आत्मविश्वास था कि यदि किसी क्षेत्र में कार्य करुँगी तो सफल होने के साथ ही अपने और दूसरों के जीवन को एक दिशा देने की ओर एक प्रयास कर सकूँगी। इसका आरम्भ हुआ देवमुनि जी की ओर से सहयोग मिलने पर, ऋषि उद्यान, महर्षि दयानन्द की पवित्र स्थली है, जहाँ मैने सर्वप्रथम यज्ञ पद्धति और भोजनशाला का कार्यभार संभाला। परन्तु कुछ ऐसा करने की चाह थी जिसमें अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग कर सकूँ। तत्पश्चात् अधिकारियों-स्वामी विष्वङ् जी, आचार्य सत्यजित् जी, देव मुनि जी, कार्यकारी प्रधान धर्मवीर जी के निर्देशानुसार पुस्तकालय में पुस्तकों का कार्य देखने का अवसर मिला ।

विशाल पुस्तकालय, अनगिनत पुस्तकें, ज्ञान को सीमा में बाँधना तो सम्भव नहीं, परन्तु व्यवस्थित करना सम्भव ही नहीं, आवश्यक भी है। मैंने धैर्य और लग्न से कार्य शुरु किया। पुस्तकालय में सभी विषयों, भाषाओं और क्षेत्रों से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध थीं । धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक से लेकर ध्यान, ईश्वर, योग, इतिहास, साहित्य, राष्ट्र से सम्बन्धित पुस्तकें हैं। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषा हो या किसी भी प्रसिद्ध साहित्यकार का नाम हो, पुस्तकों का अम्बार लगा है । यहाँ गागर में सागर भरा था । मैंने एक-एक अलमारी को व्यवस्थित करना प्रारंभ किया। विषय, भाषा, साहित्यकार, प्रकाशन इत्यादि के अनुसार जमाया गया व रजिस्टर में सभी जानकारियाँ प्रविष्ट की गई। साथ ही साफ-सफाई और पुरानी पुस्तकों के रख-रखाव पर ध्यान दिया गया। जब धीरे-धीरे पुस्तकें व्यवस्थित होने लगी तो स्वामी जी, प्रधान जी और अन्य लोगों ने विचार कर के यहाँ नई अलमारियाँ उपलब्ध करवाई जिनसे यहाँ काफी सहायता हुई अलमारियों में व्यवस्थित करने तथा रजिस्टर में प्रविष्टि होने के बाद अब पुस्तकालय में कम्प्यूटर उपलब्ध करवा दिया गया है जिससे अब सभी प्रविष्टियों का कम्प्यूटरीकरण हो सकेगा। पुस्तकालय में कई विद्वान् लोग आते हैं जिन्हें ज्ञान अर्जित करने के साथ ही रिसर्च इत्यादि के लिये भी यहाँ काफी सामग्री प्राप्त होती है। पुस्तकों में रुचि होने से स्वयं मैं भी यहाँ आकर प्रतिदिन उसी ऊर्जा के साथ कार्य करने के लिये उत्साहित रहती हूँ। यहाँ आकर, कई विद्वान् लोगों से मिलकर, विभिन्न पुस्तकों से ज्ञानार्जन कर जीवन को नई दिशा मिली है। मैं चाहूँगी कि इसी प्रकार लोग आयें और पुस्तकों से लाभ उठाकर अपने कार्यों को परिणाम दें । पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है और ज्ञान ही जीवन है।

**- वैशाली नगर, अजमेर**

---

# पुस्तक-परिचय

**पुस्तक का नाम** - विरजानन्द-विजय
**रचयिता** - कविवर डॉ. विद्याभूषण 'विभु'
**सम्पादक** - श्री राजेन्द्र जिज्ञासु
**प्रकाशक** - श्री महेन्द्रसिंह आर्य, चामघेड़ा, डा. बेरी-१२३०२९, (हरियाणा)
पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर, अबोहर-१५२११६(पंजाब)
**मूल्य**- ३५/-, **पृष्ठ**- ८७

कवि हृदय से अपने उद्‌गारों को प्रकट करता है। उसकी लेखनी काव्य धारा में हिलोरे लेने लगती है। ऐसा रूप विभु जी के काव्य में झलकता है। ऋषि देव दयानन्द के परम गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी पर छन्द बद्ध रूप आज तक के काव्यों में प्रथम बार रचना है। किसी कवि की लेखनी इस ओर बढ़ने का साहस नहीं किया। यह कृति भी डॉ. राजेन्द्र जी जिज्ञासु के अथक प्रयास से नेपाल की सीमा से प्राप्त हुई है। इस श्रम के लिए उनका साधुवाद।

विरजानन्द विजय सात सर्ग में है। कवि ने प्रथम सर्ग में- गुरु-गौरव, द्वितीय सर्ग में- बाल्यकाल, तृतीय सर्ग में- ज्ञान की खोज, चतुर्थ सर्ग में- विजय, पंचम सर्ग में- गुरु और शिष्य, षष्ठ सर्ग में- सूर्यास्त, सप्तम सर्ग में- दिव्य सन्देश। काव्य की भाषा सरस, सरल है। सभी के हृदयङ्गम की सामग्री है। काव्य धारा से दण्डी जी की संक्षिप्त जीवन झांकी मन को काव्यमय बना देती है। पाठक इसे अपना साथी बनाएँ। काव्य की अजस्रधारा में मोती ही मोती मिलेंगे। डॉ. विभु जी का आभार एवं जिज्ञासु जी का साधुवाद। एक मोती-

गायत्री में यह बल है, जप तप का उत्तम फल है।
यम नियमों के सेवन से, मुक्त हुआ नर जीवन से।

**- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

# जिज्ञासा समाधान – ५८

-आचार्य सोमदेव

**जिज्ञासा १**- आदरणीय महोदय, सादर नमस्ते।

मेरी कुछ जिज्ञासाऐं हैं जिनका मुझे अभी तक उत्तर नहीं मिला है।

**(क)** सन्ध्या और ध्यान में क्या अन्तर है।

**(ख)** ये दोनों करे या केवल सन्ध्या या केवल ध्यान।

**(ग)** सन्ध्या से अधिक ध्यान में मन ज्यादा एकाग्र होता है क्यों?

वैसे मुझमें कई कमियाँ हैं, जैसे- मुझे सन्ध्या याद नहीं है, सन्ध्या और ध्यान दोनों के लिए समय नहीं निकाल पाता हूँ। कृपया उचित मार्गदर्शन प्रदान करने की कृपा करें।

**- कैलाश धाकड़, खाचरौद**

**समाधान १- (क)** सन्ध्या और ध्यान में कोई भिन्नता नहीं है। जो काम सन्ध्या में किया जाता है वही काम ध्यान में भी किया जाता है। हमें अन्तर इसलिए दिखता है क्योंकि सन्ध्या को हम सन्ध्या मन्त्रों का पाठ मन अथवा वाणी से करने को देखते हैं और ध्यान किसी एक मन्त्र अथवा ओ३म् का जप या चिन्तन करने को मानते हैं। यथार्थ में तो दोनों एक ही हैं। व्याकरण की दृष्टि से भी दोनों शब्द सन्ध्या और ध्यान एक ही धातु 'ध्यै' से निष्पन्न होते हैं, जिसका अर्थ है चिन्तन करना। चिन्तन रूपी कार्य दोनों में रहता है। सन्ध्या का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं ''**सन्ध्यायन्ति सन्ध्यायते वा परब्रह्म यस्यां सा सन्ध्या**= भली भाँति ध्यान करते हैं वा ध्यान किया जाये परमेश्वर का जिसमें वह सन्ध्या (कहाती है।)'' पं.वि. और ध्यान के विषय में महर्षि का वचन है ''.....उस समय में ईश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना, किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप और ध्यान में मग्न हो जाना, इसी का नाम ध्यान है।'' ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका महर्षि के अनुसार दोनों में ही परमेश्वर का स्मरण विशेष है। इसलिए दोनों में अन्तर नहीं है।

**(ख)** आपका यह दूसरा प्रश्न पूर्वोक्त समाधान के अनुसार नहीं बनेगा, इसलिए ईश्वर समर्पण कर उसका स्मरण करते रहिए।

**(ग)** यहाँ भी पूर्वोक्त समाधान के अनुसार इन दोनों को एक मानकर चिन्तन करेंगे तो सन्ध्या में भी एकाग्रता बनेगी। जैसे ध्यान करते हुए चिन्तन विशेष करते हैं वैसे ही सन्ध्या करते हुए भी मन्त्रों का चिन्तन विशेष करिये दोनों में समान अनुभूति होगी। जो व्यक्ति जितना गहरा चिन्तन करेगा उसका बाह्य क्षेत्र (विषय) छोटा होता चला जायेगा और जो कम गहरा चिन्तन करता है उसका बाह्य विषय अधिक रहेगा। अर्थात् जब व्यक्ति एक ही मन्त्र अथवा उस मन्त्र के पद विशेष पर गहराई से चिन्तन करते हुए परमेश्वर के स्वरूप को देखता है तब उसके अन्य मन्त्र अथवा मन्त्र के अन्य पद छूट जाते हैं और वह थोड़े से में ही ध्यान की गहराई में चला जाता है, यह बहुत अच्छी स्थिति है। और जब व्यक्ति की स्थिति गहराई में जाने की नहीं है तब वह किसी एक मन्त्र, दो मन्त्रों अथवा सन्ध्या के सभी मन्त्रों को लेकर चिन्तन करता है, करेगा। जब अच्छी स्थिति बनेगी और व्यक्ति एक ही मन्त्र पर चिन्तन करता चला जायेगा दूसरे मन्त्र पर चिन्तन नहीं कर पायेगा तब कदापि यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारी सन्ध्या छूट गई अथवा पूरी नहीं हुई, अपितु उस एक ही मन्त्र से बनी हुई अच्छी स्थिति को देखकर सन्तोष की अनुभूति करें, करनी चाहिए। यदि हमें सन्ध्या के मन्त्रों का अर्थ ठीक संस्मरण है और हम उन अर्थों का चिन्तन करते हैं तो सन्ध्या में भी ध्यान जैसी एकाग्रता बनेगी।

यह अच्छी बात है कि आप अपनी त्रुटि-कमी स्वीकार कर रहे हैं। कमी देखी है तो उसको दूर कर सन्ध्या के मन्त्रों को याद कर, ध्यान के लिए समय निकालेंगे ऐसी हम आशा करते हैं।

**जिज्ञासा २**- क्या मनुष्य के प्रार्थना करने से ईश्वर उसके दुःखों को दूर कर सकता है? क्योंकि सुख-दुःख, रोग, जरा, मरण ये द्वन्द्व तो शरीर के साथ अनिवार्य हैं। मनुष्य अपने दुःखों-रोगों को दूर करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है, क्या ईश्वर उसकी प्रार्थना सुनता है? सुनकर उसके दुःखों को हरता है? कहते हैं- रोग, शोक अपने कर्मों के फल हैं, उन्हें भुगतना ही पड़ता है। रोग मिथ्या आहार-विहार, प्रज्ञापराध से उत्पन्न होते हैं। वैद्य की सलाह से मिथ्या-आहार विहार बन्द करके सम्यक् औषध सेवन से रोग दूर होते हैं। ये सब कर्मज हैं। जरा आदि अपरिहार्य हैं, उन्हें कोई मिटा नहीं सकता। इसी तरह मृत्यु भी अनिवार्य है, इसमें ईश्वर का कुछ लेना-देना नहीं है। फिर ईश्वर भजन क्यों करें मानव?

गीता में कहा गया है-

**न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।**
**न कर्मफलसंयोगं, स्वभावस्तु प्रवर्तते।।**

**नादत्ते कस्यचित् पापं, न चैव सुकृतं विभुः।**
**अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।।**

(५.१४,१५)

इस सबसे भी ऊपर लिखी बात का समर्थन होता है। फिर ईश्वर का भजन क्यों करें मानव?

ईश्वर को चापलूसी पसन्द नहीं है। पाप कर्मों की सजा वह अवश्य देता है। चाहे कितनी ही प्रार्थना कर ले। बुरे पाप कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। अतः मनुष्य शुभ कर्म करे, यही निष्कर्ष है। फिर लोग अपने दुःखों को दूर करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, यह सब व्यर्थ है।

शुभ कर्म करने वाले सुखी रहते हैं। फिर ईश्वर भजन क्यों करें, यह एक महत्त्वपूर्ण जिज्ञासा है। जो चिन्तन के आधार पर उत्पन्न होती है।

अतः इस जिज्ञासा का समाधान विद्वान् लोग कर सकते हैं। यही अपेक्षा है।

**डॉ. एस.एल. वसन्त, फजिल्का, पंजाब**

**समाधान**- मनुष्य के प्रार्थना करने से ईश्वर दुःख दूर करता भी है और नहीं भी करता। प्रार्थना से दुःख दूर तब होते हैं जब हमारे पुण्य का कर्माशय भरा हो और उस प्रार्थना से अन्यों की हानि न होती हो व वह प्रार्थना वेदानुकूल हो। और जब हमारा पुण्य कर्माशय ऐसा नहीं है तब प्रार्थना से दुःख दूर नहीं होते। हाँ इतने पर भी यदि हमने पूर्ण पुरुषार्थ किया है, पुरुषार्थ करने के पश्चात् कोई और मार्ग हमें नहीं सूझ रहा है तब समर्पण भाव से प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर का सहाय अवश्य प्राप्त होता है। परमेश्वर न्यायकारी व कृपालु है, उसका न्याय व कृपा यही है कि श्रेष्ठ पुण्यात्माओं व धर्म से पुरुषार्थियों को दुःख से दूर करना और अपुण्यात्माओं व आलसियों को यथायोग्य दण्ड देना।

यदि व्यक्ति ठीक-ठीक सिद्धान्त को जानता है तो वह ईश्वर का भजन, प्रार्थना अवश्य करेगा। हमें प्रार्थना के स्वरूप व उसके फल को ठीक से समझ लेना चाहिए। इस विषय में हमें भ्रम इसलिए हो जाता है क्योंकि हम प्रार्थना के स्वरूप व फल को अच्छे से जाने-समझे हुए नहीं होते। प्रार्थना का स्वरूप महर्षि दयानन्द लिखते हैं ''अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य के सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं'' आर्योद्दे.। ''.....अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है'' स.प्र.। यहाँ प्रार्थना में महर्षि ने मुख्य रूप से पुरुषार्थ पर बल दिया है, केवल प्रार्थना मात्र पर नहीं। जब व्यक्ति धर्म से पुरुषार्थ करता है तब परमेश्वर सहायता करता ही है। सबके उपकार करने की प्रार्थना में परमेश्वर सहायक होता है किसी के हानिकारक कर्म में नहीं।

प्रायः हम प्रार्थना का फल दुःख दूर होना, रोग-शोक दूर होना, साधन-सुविधाओं का मिलना ही मानते हैं, मान लेते हैं। किन्तु प्रार्थना का फल यह ही नहीं है उसका फल अन्य भी है। इस विषय में महर्षि लिखते हैं ''अभिमान का नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुण ग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना प्रार्थना का फल है।'' आर्योद्दे. ''प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना।'' स.प्र.। जब प्रार्थना की जाती है तब ये फल हमें प्राप्त होते हैं। यदि हमारी प्रार्थना ठीक-ठीक है तो हमारे अन्दर सरलता, नम्रता, गुणों के प्रति आकर्षण और उनको प्राप्त करने का प्रयत्न, आत्मा के अन्दर उत्साह, मानसिक शान्ति का होना आदि निश्चित रूप से होगा ही। जब ऐसा होगा तो स्वभाविक रूप से दुःख दूर हो सुखों का मिलना होकर जीवन शान्ति से व्यतीत होगा। भले ही बाह्यरूप दुःख, रोगादि दिखे किन्तु उसको सहन करने का बल, ज्ञान आन्तरिक रूप से परमेश्वर अवश्य देता है। इसलिए प्रत्येक को परमात्मा से प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए।

सभी रोग, शोक, दुःख कर्मों के फल नहीं हैं, अन्य प्राणियों के द्वारा अथवा हमारे अपने अज्ञान से भी मिल सकते हैं, मिले हैं। यदि हम सभी कुछ कर्मों का फल मानते हैं और उनको भोगना ही पड़ेगा ऐसी मान्यता भी है तो उनको दूर करने का उपाय भी नहीं करना चाहिए। फिर भी हम उपाय करते हैं। जैसे औषधोपचार करके, साधन-सुविधा एकत्रित करके, ज्ञान को बढ़ा करके अपने रोग, शोक आदि को दूर करने का उपाय करते हैं वैसे ही धर्म पूर्वक पुरुषार्थ करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करना भी एक प्रबल उपाय है।

जरा-मृत्यु अनिवार्य है इसलिए इसमें ईश्वर का कुछ लेना-देना नहीं, यह कहना उचित नहीं, क्योंकि जरा और मृत्यु की व्यवस्था भी ईश्वर ने ही हमारे कल्याण के लिए कर रखी है। शरीरों की रचना परमेश्वर ने इस प्रकार की रखी है कि ये आयेंगी ही, मूल व्यवस्था में तो ईश्वर का लेना-देना है ही। यदि हम जरा-मृत्यु के दुःख को देख, इससे बचने का उपाय खोजें तो वह उपाय परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना ही मिलेगी। इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करनी ही चाहिए।

गीता के ये दोनों श्लोक भी ईश्वर प्रार्थना का निषेध नहीं कर रहे। गीता में तो ईश्वर समर्पण की ही बात आती है। इन श्लोकों में जीवात्मा की कर्म करने की स्वतन्त्रता को बताया है, जीव कर्म करता है, कर्म फल से संयुक्त होता है यह स्वाभाविक है। यहाँ ईश्वर जीव के कर्त्तापन, कर्म आदि की रचना नहीं करता। न ही ईश्वर किसी के

पाप को लेता और न पुण्य को बढ़ाता है। इन दोनों श्लोकों की बातें सिद्धान्त को पुष्ट कर रही है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, वह कर्म करता, फल को पाता है यह स्वभाविक है, परमात्मा उनको स्वाभाविक रूप से फल देता है। जिसके जितने पाप-पुण्य है वह उतना ही (न कम न अधिक) फल भोगता है यही ईश्वर का न्याय है।

हाँ यह निश्चित है कि ईश्वर चापलूसी पसन्द नहीं करता किन्तु यथार्थता को तो पसन्द करता है। झूठी प्रशंसा, प्रार्थना से कुछ नहीं बनता। यह अवश्य है कि पाप कर्मों की सजा अवश्य मिलती है। व्यक्ति चाहे कितनी प्रार्थना करे। परन्तु यदि व्यक्ति ईमानदारी से अच्छा बनना चाहता है और उसके लिए पुरुषार्थ करता है और तब प्रार्थना करता है तो दयालु परमेश्वर उसको उत्साह देकर सहयोग करता है, शक्ति सामर्थ्य देता है, इसलिए प्रार्थना करनी चाहिए।

बुरे पाप कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा यह निश्चित है, किन्तु एक व्यक्ति ईश्वर के प्रति आस्था न रखता हुआ भोगता है और एक आस्था रखता हुआ दोनों में अन्तर मिलेगा। आस्था रहित रो-रो कर भोगता है और आस्था वाला धैर्य पूर्वक भोगता है, यह ईश्वर कृपा का फल है।

शुभ कर्म करने वाले सुखी रहते हैं यह भी ईश्वर की ही व्यवस्था है, व्यवस्था से है। अन्यथा संसार में वे भी दुःखी, अशान्त मिलते। इसलिए सर्वत्र ईश्वर की व्यवस्था को देखें और ईश्वर की भक्ति विशेष करें। सच्ची भक्ति, प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं होती। अस्तु।

**जिज्ञासा ३**- श्रीमान् जी सादर नमस्ते। हम वेदमन्त्रों को पढ़ते हैं। उनके अर्थ भावार्थ भी पढ़ते हैं परन्तु हमें यह पता नहीं चलता कि इस वेदमन्त्र का ऋषि कौन है, देवता कौन है, छन्द कौनसा है? इसका ज्ञान नहीं है। आपसे प्रार्थना है कि गायत्री मन्त्र का छन्द तो गायत्री है परन्तु इसका ऋषि और देवता बताने की कृपा करें। ऐसे ही विश्वानि देव प्रार्थना मन्त्र का ऋषि व देवता और छन्द भी बता देवें। मन्त्र का ऋषि व देवता वेदमन्त्र में ही होता है परन्तु हमें पता नहीं चलता- इसका भी ज्ञान दे दे तो धन्यवाद।

**- देवराज आर्यमित्र, डब्ल्यू जेड-४२८, हरि नगर, नई दिल्ली-६४**

**समाधान**- वेदमन्त्र के छन्द, देवता, ऋषि प्रायः वेद संहिताओं अथवा वेदभाष्यों में उपलब्ध होते हैं, उससे इनका ज्ञान किया जा सकता है। देवता और ऋषि अर्थात् मन्त्र का विषय और उस मन्त्र को साक्षात् करने वाला ये वेद संहिता में सूक्त अथवा अध्याय का प्रारम्भ होने से पहले मिलते हैं। मन्त्र का देवता प्रायः मन्त्र में मिल जाता है। अनेक बार सीधे-सीधे शब्दों में अथवा उसके पर्यायवाची शब्दों के द्वारा। आपने लिखा 'ऋषि और देवता वेदमन्त्र में ही होता है।' सो ठीक नहीं क्योंकि देवता तो मन्त्र में होता है, किन्तु ऋषि मन्त्र में नहीं होता। ऋषि तो उस मन्त्र के अर्थ का द्रष्टा होता है, उस द्रष्टा ऋषि का नाम मन्त्र के साथ इतिहास की दृष्टि से लिखा आ रहा है कि इस ऋषि ने प्रथम बार इस नाम के ऋषि ने अमुक मन्त्र का साक्षात् किया था। अनेक मन्त्रों में ऋषि का नाम दिखता है, यथार्थ में वह नाम उस ऋषि का वास्तविक नाम नहीं होता अपितु उस मन्त्र का साक्षात् करने के कारण गौणिक नाम होता है। उस गौणिक नाम को देखकर कुछ लोग मानते हैं कि मन्त्र में ही ऋषि होता है, सो उचित नहीं है।

छन्द ज्ञान के लिए तो छन्द शास्त्र को पढ़ना-जानना पड़ेगा तभी छन्द को जान पायेंगे। गायत्री मन्त्र वेद में अनेक स्थान पर आया है। इस मन्त्र का सविता देवता और निचृद् गायत्री छन्द सब स्थान पर एक जैसा है। ऋषि भिन्न है यजु. ३६.३ व ३.३५ का ऋषि विश्वामित्र और यजु. ३०.२ का ऋषि नारायण है। ऐसे ही विश्वानि देव मन्त्र का देवता सविता और छन्द गायत्री है, किन्तु ऋषि इसके भी भिन्न-भिन्न हैं। यजु. ३०.३ का विश्वामित्र और ऋ. ५.८२.५ का श्यावाश्वमेत्रेय ऋषि है।

**ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

## परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

# संस्था - समाचार

**१ से १५ फरवरी २०१४**

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर में होने वाली क्रियाकलापों, गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण इस लेख में प्रस्तुत कर रहा हूँ। आनासागर की लहरों से संलग्न यह आश्रम एक ऐसा स्थल है जहाँ प्रतिदिन अनेकों नवयुवक, वानप्रस्थी और संन्यासी अपनी-अपनी आत्मिक, शारीरिक, मानसिक शान्ति व ईश्वर के भजन में सदैव लगे रहते हैं। इस आश्रम में प्रतिदिन यज्ञ, सत्संग, गौ-सेवा व वेदादिसत्य शास्त्रों का पठन-पाठन प्रभुकृपा से चलता रहता है। आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करने व करवाने का उद्देश्य को लेकर छात्र यहाँ संस्कृत व्याकरण, दर्शनों, उपनिषदों, गीता, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। देशभर के अन्दर यहाँ के सत्संगों को दूरदर्शन के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने के लिए वीडियो रिकॉर्डिंग भी होती है। जिसे आप आस्था, आस्था भजन चैनलों पर देख व सुन सकते हैं। प्रातःकालीन सत्संग में कार्यकारी प्रधान **डॉ. धर्मवीर जी** ने पुरुषाध्याय की चर्चा को जारी रखते हुए बताया कि मानव निर्मित नामकरण व ईश्वरकृत नामकरण में क्या अन्तर होता है? मानव निर्मित नामकरण के अन्दर अनेक बार गुण का भाव नाम में नहीं आता है। जैसे लोक में हम किसी का नाम करोड़ीमल देखते हैं किन्तु उस नाम का गुण न होकर वह दरिद्र होता है। लेकिन ईश्वरकृत नामकरण पूर्ण व गुणों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। वेद के अन्दर जिन-जिन वस्तुओं के जो-जो भी नाम हैं वे वस्तु के स्वभाव, गुणों से निश्चित रूप से मेल रखते हैं।

**मानसिक यज्ञः**- संसार के सर्वश्रेष्ठ यज्ञ कार्य **( यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म )** के प्रकारों में मानसिक यज्ञ की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि बाह्य यज्ञ तो घी, सामग्री, समिधा आदि साधनों से निष्पन्न कर लेते हैं किन्तु हम अपने अन्दर यज्ञ कैसे करेंगे तो कहा मन से। **बृहदारण्यकोपनिषद्** के अन्दर कथा आती है कि महर्षि याज्ञवल्क्य से किसी ने प्रश्न पूछा कि महाराज आप यज्ञ करने का उपदेश देते हैं किन्तु वह यज्ञ तो साधनों के द्वारा सम्पन्न होता है किन्तु जिनके पास साधन नहीं हैं वे यज्ञ कैसे करेंगे? महर्षि जी उत्तर देते हैं कि यदि साधन नहीं है तो जो आपके पास सुलभ है, आसानी से प्राप्त है उसी से यज्ञ कर लो। मिट्टी को ही घी, सामग्री, कुण्ड मानकर मिट्टी से ही आहुति देकर यज्ञ सम्पन्न कर लीजिए। यदि मिट्टी भी न मिले तो महाराज किससे यज्ञ करें? महर्षि जी कहते हैं पानी को ही घी, सामग्री कुण्ड मानकर पानी की ही आहुति देकर यज्ञ को पूर्ण करो। यज्ञ साधन सापेक्ष नहीं है। साधनों के अभाव में यज्ञ छोड़ दें ऐसा नहीं होना चाहिए। प्रश्नकर्त्ता फिर पूछता है कि यदि पानी भी प्राप्त न हो तो यज्ञ कैसे करें? महर्षि याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं कि फिर मन को घी, सामग्री मानकर यज्ञकुण्ड रूपी मन में आहुति दीजिए और यज्ञ सफल करिये। महर्षि जी उपनिषद् में बताते हैं कि यज्ञ अवश्य करना चाहिए, यज्ञ से बढ़कर कोई कार्य नहीं है। इसलिए वेद कहता है कि मानसिक यज्ञ करो और यह यज्ञ वेद के चिन्तन, मनन और ज्ञान से ही सम्भव है, अन्य किसी भी प्रकार से नहीं।

**आत्मा व शरीर पृथक्-पृथक्ः**- एक प्रयोगशाला के अन्दर बैठा हुआ व्यक्ति जैसे अनेकों यन्त्रों, उपकरणों, साधनों के माध्यम से संसार के अनेकों ज्ञानों, वार्ताओं, क्रियाकलापों को संचालित व एकत्रित कर लेता है ठीक वैसे ही इस शरीर रूपी प्रयोगशाला में बैठा हुआ आत्मा इन बुद्धि, मन आदि इन्द्रिय रूपी साधनों से अनेकों ज्ञान व अनुभूतियाँ प्राप्त करता है न कि शरीर। वह आत्मा शरीर से पृथक् है। गीता के अन्दर योगीराज कृष्ण कहते हैं **''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।''** अरे! उस आत्मा को न तो शस्त्र काट सकते हैं और न ही अग्नि जला सकती है, वह तो शरीर से पृथक् है। यह सिद्धान्त मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी जान पाता है कब? जब अपने ही किसी परिजन, हितैषी, सम्बन्धी, माता, पिता, भाई आदि की मृत्यु हो जाने पर। जब उसके सम्मुख वह शव (शरीर) पड़ा रहता है तो वह यह जान लेता है कि ये वो नहीं जिसे मैं जानता, मानता था किन्तु वह तो इससे पृथक् सत्ता, आत्मा थी। वही मेरा सब कुछ था, किन्तु आज वह नहीं रहा और जब व्यक्ति आत्मा और शरीर को अलग-अलग समझने लगता है तब वह राग-द्वेष आदि दुःखों से मुक्त व ईश्वर को समझने में सरलता, सहजता का अनुभव करने लगता है।

**गावो विश्वस्य मातरः** :-सायंकालीन यज्ञोपरान्त सत्संग में **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने बताया कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी न केवल मानवों की उन्नति, अपनी उन्नति चाहते थे बल्कि वह पशुओं की भी उन्नति चाहते थे। गाय की महत्ता को देखते हुए स्वामी जी ने **'गोकरुणानिधि'** नामक पुस्तक लिखी। जिसमें गायों के उपकारों, उससे होने वाले उपचारों को भी बताया है। गो-वध बन्द कराने के लिए महर्षि ने हजारों लोगों के हस्ताक्षर करवा के महारानी विक्टोरिया के पास भी भिजवाया था। जिससे कि गोधन बढ़े, लोगों में आरोग्यता, स्वास्थ्य वर्द्धन,

कृषि कार्य में सफलता मिले। आचार्य जी ने गायों के महत्व, लाभों व उससे होने वाले उपकारों का वर्णन अत्यन्त सरलता से प्रस्तुत किया। हम सभी को सदैव गौमाता का संरक्षण करना चाहिए।

**मन की अवस्थाएँ:-** सत्संग सागर में **पूज्य स्वामी विष्वङ् जी** ने मन की पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया। सर्वप्रथम समाधि में जाने व ईश्वर को जानने के लिए मन को समझना जरुरी है। मन की क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ़, एकाग्र व निरुद्ध अवस्थाएँ होती हैं। तीन गुण होते हैं सबमें- सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण। जब रजोगुण व तमोगुण बढ़ा हुआ होता है मन में तो वह क्षिप्त अवस्था कहलाती है। उस काल में व्यक्ति सांसारिक ऐश्वर्यों, संसार के वैभवों को प्राप्त करना चाहता है वह ईश्वर को भूला रहता है। मूढ़ अवस्था के अन्तर्गत मन में तमोगुण की प्रधानता रहती है उस काल में वह अधर्म के कार्यों को करने में लगा रहता है। मस्तिष्क में अज्ञान की प्रबलता हो जाती है। विक्षिप्त अवस्था का वर्णन करते हुए स्वामी जी कहते हैं कि जब सत्वगुण की प्रबलता व रजोगुण भी कुछ मात्रा में मन के अन्दर उभरा होता है व तमोगुण दबा रहता है वह अवस्था विक्षिप्त कहलाती है। अच्छे कार्यों दान, परोपकार, यज्ञ आदि श्रेष्ठ कार्यों को करने में मन लगने लगता है। परन्तु लोक में विक्षिप्त का अर्थ लोग पागल, कब क्या कर डाले उसे कहते हैं पर योग में विक्षिप्त का मतलब प्राय: एकाग्र होने को कहते हैं। लगातार मन एकाग्र तो नहीं होता है किन्तु स्थिति बनती व टूटती भी है। संसार में जितने भी व्यक्ति हैं उन सबके अलग-अलग स्तरों, अवस्थाओं, कालों में अलग-अलग विक्षिप्त अवस्थाएँ होती हैं।

**डॉ. धर्मवीर जी के कार्यक्रम:- १४ फरवरी २०१४-** पारिवारिक सत्संग दिल्ली में।

**१७ से २३ फरवरी २०१४-** यज्ञ के होता सोनीपत, हरियाणा में कार्यक्रम।

**२४ फरवरी २०१४-** पारिवारिक सत्संग, मुजफ्फरनगर में।

**२५ से २७ फरवरी २०१४-** आर्यसमाज कैथल के उत्सव में शिवरात्रि के अवसर पर सत्संग व व्याख्यान।

**आचार्य सानन्द जी के कार्यक्रम:- २५ जनवरी २०१४-** हवन एवं प्रवचन रोहतक में।

**२६ जनवरी २०१४-** रोहतक में ध्यान, साधना सम्बन्धित चर्चा।

**२७ से २९ जनवरी २०१४-** मॉडल टाउन आर्यसमाज में, महिला सत्संग में प्रवचन, हवन।

**३० जनवरी २०१४** को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में विद्यार्थियों को उद्‌बोधन व सद्‌प्रेरणा।

**ब्र. अमित आर्य, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।**

# प्रतिक्रिया

**१.** आपका सम्पादकीय परोपकारी नवम्बर द्वितीय में पढ़कर मन बड़ा विचलित-खिन्न हो गया। आपने साम्प्रदायिक विधेयक का पूरा विश्लेषण किया है।

आपका पूरा सम्पादकीय ऐसा है जिसे देश के सर्वोच्च न्यायालय में पेश किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त परोपकारिणी सभा तथा देश के सभी आर्यसमाजों को इसका विरोध प्रभूत रूप में करना चाहिए। यह केवल पढ़कर चुप रहने का समय नहीं है।

उच्च कानूनविदों के सहयोग से सर्वोच्च न्यायालय इसके विरुद्ध याचिका दायर करनी चाहिए। आपने बहुत ही सामयिक चेतावनी दी है।

आशा है आप यथोचित कर कृतार्थ करेंगे।

अनन्त शुभकामनाओं के साथ। एक ८८ वर्षीय वरिष्ठ नागरिक पत्रोत्तर की अपेक्षा में

**डॉ. एस.एल. वसन्त, बी-१३८४, नागपाल स्ट्रीट, फजिल्का-१५२१२३ (पंजाब)**

**२.** आदरणीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते।'परोपकारी' पत्रिका हर दृष्टिकोण से दिन-प्रतिदिन और भी अधिक निखरती चली जा रही है, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। दिसम्बर द्वितीय-२०१३ में श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' के अन्तर्गत मेरे लेख एवं पूरे लेखन पर जो टिप्पणी की है वह काल्पनिक एवं निराधार है। मैंने अपने किसी भी लेख तथा पुस्तक में यह नहीं लिखा है कि कांग्रेस के इतिहास में महर्षि दयानन्द जी को राष्ट्रपितामह कहा गया है। हाँ मैंने यह लिखा है कि लोकसभा के अध्यक्ष रहे श्री आयंगर जी ने महर्षि जी के सम्बन्ध में अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा था- 'गाँधी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे। वे हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों और स्वतन्त्रता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे।'

**महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव, सुन्दर नगर, जिला मण्डी-१७४४०१ (हि.प्र.)**

# आर्यजगत् के समाचार

**१. वेद प्रचार**- दिनांक ३१ जनवरी से ६ फरवरी २०१४ तक पंचायत समिति क्षेत्र मकराना, राजस्थान में वेद व सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार, गोरक्षा, नशा-मुक्ति, नारी शिक्षा, भ्रूण हत्या पर रोक, पाखण्डों का खण्डन, डोरा, ताबीज आदि विषयों पर उपदेशों व व्याख्यानों के माध्यम से जनता में जागृति फैलाना, ईश्वर का सच्चा स्वरूप, धर्म का सच्चा स्वरूप, हवन का महत्त्व आदि कार्यक्रम आयोजित कराये गये। इस कार्यक्रम का संयोजन व नेतृत्व चौ. किशनाराम आर्य बीलू, प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नागौर राजस्थान व श्री हेमाराम जी आर्य भींचावा तथा विद्वान् आचार्य श्री शिवकुमार जी कोलायत वेदपाठी ब्रह्मचारी श्री राहुल, भजनोपदेशक श्री हरिसिंह जी अलवर थे।

**२. यज्ञ सम्पन्न**- ९ फरवरी को आर्यसमाज जयपुर दक्षिण एवं श्री कृष्ण चेतना मंच की ओर से मानसरोवर कावेरी पथ स्थित रामकृष्ण पार्क, जयपुर में 'मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति यज्ञ' सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सैकड़ों नर-नारियों ने आहुतियाँ दी।

**३. प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न**- गुरुकुल बटुक विकास केन्द्र, अलिहाबाद, रंगारेड्डी, आन्ध्र प्रदेश एवं वेद प्रचार निधि दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर' १० से १७ जनवरी २०१४ सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। शिविर में योग के सैद्धान्तिक पक्षों का बड़ी सरलता से परिचय कराया गया एवं उसमें उत्पन्न शंकाओं का समाधान सन्तोषजनक ढंग से किया गया।

शिविर में उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के साधकों के अतिरिक्त गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी भाग लिया। शिविर में भोजन एवं आवास की उत्तम व्यवस्था नि:शुल्क थी। शिविर आचार्य भद्रकाम वर्णी जी के दिशा निर्देशन में आयोजित किया गया।

**४. शिक्षा एवं क्रीड़ा जगत् की उपलब्धियाँ**- आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ नजीबाबाद की तीन मेघाविनी छात्राओं कु. कल्पना, कु. उपासना, कु. श्रद्धा (ऋतिका) ने जे.आर.एफ. उत्तीर्ण कर कीर्तिमान बनाया तथा कु. सुशीला, कु. मनीषा, कु. प्रतिज्ञा, कु. इडा शास्त्री ने नेट राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके अतिरिक्त कु. स्नेहा ने गत वर्ष कु. मृणालिनी ने इस वर्ष शास्त्री परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

खेल जगत् की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं- आत्मसुरक्षा की विद्या ताईक्वाण्डो में अनेक जनपदीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इस गुरुकुल की कन्याएँ अब तक ६० स्वर्ण, ७० रजत, ७२ कांस्य पदक प्राप्त कर चुकी हैं। अभी हाल ही में कु. अपाला, कु. सूर्या, कु. संयोगिता, कु. रचना ने स्वर्ण पदक तथा कु. माधवी, कु. सुलभा, कु. कल्पना ने कांस्य पदक प्राप्त कर गुरकुल की श्रीवृद्धि की है। यह प्रतियोगिता फैडरेशन ऑल इण्डिया ताईक्वाण्डो चैम्पियनशिप के तत्वावधान में चण्डीगढ़ में सम्पन्न हुई।

विदित हो कि विश्व भेषज कोष निर्माण के प्रसंग में गुरुकुल में पधारे भारत स्वाभिमान ट्रस्ट पतंजलि योगपीठ के आचार्य बालकृष्ण जी ने विजयी कन्याओं को पदक भेंट किये और पतंजलि योगपीठ की ओर से ताईक्वाण्डो की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली छात्राओं को पाँच-पाँच हजार, कांस्य पदक विजेता छात्राओं में प्रत्येक को तीन हजार एक सौ तथा गुरुकुल की सभी छात्राओं को च्यवनप्राश आदि पतंजलि के उत्पादों को देकर पुरस्कृत किया।

**५. सम्मानित**- गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद प्रतिवर्ष वैदिक साहित्य महर्षि दयानन्द के जीवन दर्शन तथा आर्य सिद्धान्तों की पुष्टि में वर्ष के सर्वोत्तम ग्रन्थ के लेखक को प्रोत्साहनार्थ गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित करती है। यह पुरस्कार वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय की स्मृति में आरम्भ किया गया है। समिति का उद्देश्य है कि आर्यसमाज में उच्च कोटि के ग्रन्थों का लेखन कार्य अनवरत् रूप से चलता रहे। समिति ने यह पुरस्कार १२००/- रु. से आरम्भ करके उत्तरोत्तर १५००/-,५०००/-, ११०००/- प्रदान किया गया। विगत वर्षों में ५ विद्वानों को ग्यारह-ग्यारह हजार की राशि प्रदान की गई है। अब तक २४ विद्वानों को पुरस्कार दिया जा चुका है। आगामी वर्ष पुरस्कार की रजत जयन्ती वर्ष है। समिति आपके सहयोग से जयन्ती वर्ष से २१०००/- रु. की पुरस्कार राशि देने की योजना है।

पुरस्कृत विद्वानों की नामावली- सर्वश्री ब्रह्ममुनि विद्यामार्तण्ड, पं. वीरसेन वेदश्री, महात्मा आनन्द स्वामी, डॉ. भवानीलाल भारतीय, डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, प्रो. पं. विश्वनाथ विद्यालंकार, डॉ. मुंशीराम शर्मा, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, पं. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. उर्मिला श्रीवास्तव, डॉ. सुद्यम्न आचार्य, पं. सत्यव्रत राजेश, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, पं. उमाकान्त उपाध्याय, डॉ. प्रियव्रत दास, डॉ. कुशलदेव शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, प्रो.

महावीर अग्रवाल, प्रो. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. रमेशदत्त मिश्र।

**६. वार्षिकोत्सव**- श्रुति विज्ञान आचार्य कुलम् का आठवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ८ व ९ मार्च को मनाया जा रहा है। सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि उत्सव में पधार कर सत्संग का लाभ उठावें तथा वैदिक धर्म में दीक्षित हो रहे ब्रह्मचारियों के अद्भुत कार्यक्रमों को देख वैदिक धर्म का गौरव बढ़ावें।

**मार्ग निर्देश**- दिल्ली से अम्बाला मार्ग पर अम्बाला से २० किलोमीटर पहले शाहाबाद मारकण्डा रेल या बस के द्वारा पहुँच कर, शाहाबाद से लाडवा रोड पर शाहबाद के शुगर मिल के पास ही छपरा गाँव में गुरुकुल पहुँचें।

**७. जन्मदिन मनाया**- इस वर्ष १४ जनवरी २०१४ के दिन मकर संक्रान्ति के दिन श्रीमती तारामणि देवी आर्या ने अपना ८०वाँ जन्मदिन मनाया। श्रीमती तारामणि जी परोपकारिणी सभा के वयोवृद्ध प्रधान श्री गजानन्द जी आर्य की धर्मत्नी हैं। गजानन्द जी की आर्यसमाज के प्रति अगाध निष्ठा के विषय में सभी भली भाँति परिचित हैं, लेकिन तारामणि जी भी उनसे कुछ कम नहीं हैं। उनका जन्मदिन यजुर्वेद के पाठ के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर उनके दोनों पुत्र महेन्द्र, नरेन्द्र, छोटी पुत्रवधु रंजना एवं उनकी पुत्री सविता भी उपस्थित थी। उनके सभी बच्चों ने अपनी माँ के जन्मदिन मनाने का एक अनूठा तरीका निकाला। सबने अपनी माँ को उपहार के रूप में दिया अपना समय। चार-पाँच दिन सभी अपने व्यवसाय आदि से निवृत्त होकर कोलकाता आये, पूरे समय अपने माता-पिता के साथ रहने और सन्ध्या, हवनादि सत्संग करने के लिए।

परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान श्री धर्मवीर जी और उनकी धर्मपत्नी ज्योत्सना जी एवं सभा के उपप्रधान श्री शत्रुघ्नलाल जी गुप्ता और उनकी धर्मपत्नी सुशीला जी की उपस्थिति से कार्यक्रम में चार चाँद लग गया। शहर के अन्य विशिष्ट इष्टमित्र एवं रिश्तेदार भी इस अवसर पर उपस्थित थे। ईश्वर श्रीमती तारामणि जी को दीर्घायु दे।

## वैवाहिकी

८. दीपिका चौरसिया, २६ वर्षीय युवती हेतु स्वजाति या आर्य परिवार के सुशिक्षित एवं संस्कारवान् समकक्ष युवक की आवश्यकता है। जन्मतिथि-३०/७/१९८७, व्यवसाय-अध्ययनरत्, शिक्षा- बी.कॉम., सी.ए., सी.एस. फाइनल, जि. छिन्दवाड़ा (म.प्र.), **सम्पर्क सूत्र- माध्वी आर्या-०९३०३३७८२९२**

## चुनाव

**९. आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-।।, एम. ब्लॉक, रोड नं. १, नई दिल्ली** के चुनाव में **प्रधान**- श्री प्रियव्रत, **मन्त्री**- श्री सहदेव नांगिया, **कोषाध्यक्ष**- श्री एस.के. कोहली को चुना गया।

**१०. आर्यसमाज टोंक ( राज. )** के चुनाव में **प्रधान**- श्री सुखलाल आर्य, **मन्त्री**- श्री पुरुषोत्तम पाटिदार, **कोषाध्यक्ष**- श्री रामरतन आर्य को चुना गया।

**११. आर्यसमाज भीमगंज मण्डी, कोटा ( राज. )** के चुनाव में **प्रधान**- श्री सूरजमल त्यागी, **मन्त्री**- श्री ओमदत्त गुप्ता, **कोषाध्यक्ष**- श्री अजय सूद को चुना गया।

**१२. आर्यसमाज खलासी लाईन, सरदार पटेल मार्ग, सहारनपुर** के चुनाव में **प्रधान**- श्री बारूराम शर्मा, **मन्त्री**- श्री राजवीरसिंह वर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री रामकिशोर सैनी को चुना गया।

**१३. आर्यसमाज वेल्लिनेली डाक, पालक्काड, केरल** के चुनाव में **प्रधान**- श्री वी. गोविन्द दास, **मन्त्री**- श्री के.एम. राजन, **कोषाध्यक्ष**- श्री एस. श्रीधर शर्मा को चुना गया।

**१४. आर्यसमाज जावदा, निम्बाहेड़ा** के चुनाव में **प्रधान**- श्री सागरमल मेनारिया, **मन्त्री**- श्री दशरथ मेनारिया, **कोषाध्यक्ष**- श्री तुलसीराम मेनारिया को चुना गया।

## शोक समाचार

**१५.** श्री धर्मसिंह कोठारी का दिनांक १५ फरवरी २०१४ को देहावसान हो गया। कविराज श्री धर्मसिंह कोठारी सत्यानुरागी, वेदों के विद्वान्, यज्ञप्रेमी एवं आयुर्वेदज्ञ थे और वर्षों तक नगर आर्यसमाज अजमेर के प्रधान रहे। वे भारत के राष्ट्रपति द्वारा आयुर्वेद मार्तण्ड की उपाधि से विभूषित किये गए और अजमेर आयुर्वेद सम्मेलन के अध्यक्ष भी रहे। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी में उनका अनुपम योगदान रहा।

उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के ३४वें संस्करण का सम्पादन किया जो आर्यजगत् की अनमोल धरोहर माना जाता है।

उन्होंने परिवार में वैदिक संस्कारों का रोपण और पल्लवन कर सत्य और धर्म पर चलने का मार्ग प्रशस्त किया। आप मूलत: मसूदा के प्रतिष्ठित जैन परिवार से थे। स्वामी दयानन्द जी द्वारा कोठारी परिवार को वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया था। परिवार में आज भी वैदिक परम्परा विद्यमान है।

वे अपने अनुगामी चार पुत्र, दो पुत्रियाँ और भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

परोपकारिणी सभा, मृतात्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना एवं परिवार को असह्य दु:ख सहन करने की कामना करती है।

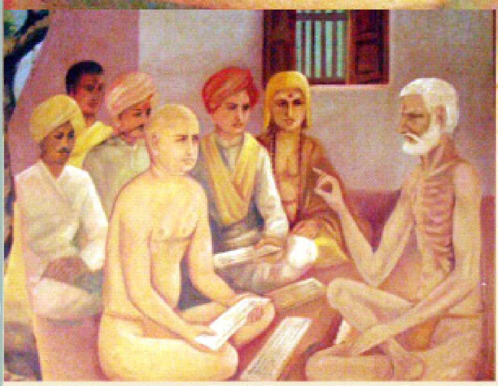

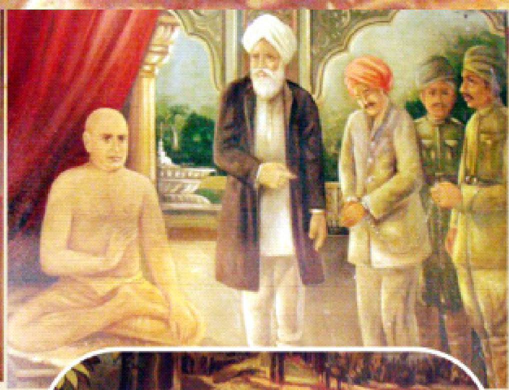

# महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : २८ फरवरी , २०१४ RNI. NO. ३९५९/५९

# ऋषि भक्त
# राव युधिष्ठिर सिंह
## ( रेवाड़ी, हरियाणा )

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ ९ पर

प्रेषक:
**परोपकारिणी सभा**
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
( राजस्थान ) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ MITTAL 9829797513